

世親の『五蘊論』——校訂テキストとリファレンス——

瀧川郁久

緒言

仏教文献の解説の為には、術語の正確な理解が不可欠である。ことにアビダルマ論書では、法の種類と定義が明確に示された上で議論がなされているので、先ずその定義を的確に知ることが必要になる。それには原典の記述から定義を取り出してまとめた定義集が有益である。

そのような定義集として、すでに『俱舍論』の五位七十五法の定義をまとめた定義集(本庄良文『『俱舍論』七十五法定義集』三康文化研究所年報 26/27, 1993)が発表されている。各々の法の定義のサンスクリット原文と漢訳、及び和訳が示され、出典が明記されているため、アビダルマ文献の学習に非常に有益なものである。

当初はこの『『俱舍論』七十五法定義集』の形に倣って、『五蘊論』の定義集を作成する心算でいたが、本稿では敢えて五位の形に整理せず、『五蘊論』蔵漢対照テキストに簡単なリファレンスを付して発表することにした。『五蘊論』はもともと定義集の如きものであるから、本文全体の校訂テキストを用意して項目を見易く示しさえすればそのまま定義集の用を果たしうるし、またそのほうが便利でもあらうと思われるからである。

そこで、本稿では、左ページにチベット語訳の校訂テキストを、右ページに漢訳テキストと簡単なリファレンスを掲載した。リファレンスは、誌面の都合上、原則として各項目に一つづつ、『瑜伽師地論』『俱舍論』『阿毘達磨集論』『唯識三十頌釈』などの関連文献から一致または類似するサンスクリット文を拾ったものである。甚だ不十分なものであるが、理解の手掛かりにはなろうと思う。

本稿には邦訳は付していないが、『五蘊論』の翻訳としては、次のものが発表されている。

下川辺季由・高山博史「『五蘊論』研究(一)」仏教学論集 12, 1976.

S.Anacker, *Seven Works of Vasubandhu*, Delhi 1984, pp.49-82.

また『五蘊論』のサンスクリット還元テキストも発表されているが、残念ながら未だ管見を得ていない。

S.B.Shastrī, *Pañcaskandhaprakaraṇa of Vasubandhu*, A Restitution into Sanskrit from the Tibetan Version, together with Introduction, English Translation, Notes. Kelanya 1969.

『五蘊論』の心所法の一々の定義については、竹村牧男『唯識の探究』(春秋社、1992)第三章「唯識の心理分析」において、『三十頌釈』『阿毘達磨集論』『成唯識論』の定義と比較しながら解説がなされている。

さらに、本年九月の日本印度学仏教学会学術大会において、望月海慧氏の発表資料として、『五蘊論』安慧釈のうちの遍行・別境心所法の部分のテキストと詳細なリファレンスが配布された。

なお本稿で用いたチベット語訳校訂テキスト及び漢訳テキスト、ならびにリファレンスは本誌の刊行にあわせて、東洋文庫チベット研究室のホームページからインターネット上でテキストデータベースとして公開し、各位の研究の便に供したい。URLは <http://www.toyo-bunko.or.jp/Tibetan/> である。

テキストおよび略号

チベット語訳テキスト

ཡུང་པོ་ལྷན་རྒྱུ་བྱེད་པ།

- P** Peking edition: No. 5560. si 12b6-19a2.
D sDe-dge edition: No. 4059. shi 11b4-17a7.
C Co-ne edition: shi 11b4-17a6.
N sNar-thang edition: si 12b2-17b.

(校訂テキスト中では、北京版のフォリオ・行数を[12b6]のように示し、他の版はフォリオのみ[D11b]のように示す。)

漢訳テキスト

大乘五蘊論, 大正蔵31 (No.1612), 848b-850c.

リファレンス略号

- AK** Abhidharmakośakārikā. v.i.
AKBh Abhidharmakośabhāṣya. P.Pradhan, *Abhidharmakośabhāṣya of Vasubandhu*, 2nd edition, Patna 1975.
AS Abhidharmasamuccaya. V.V.Gokhale, "Fragments from the Abhidharmasamuccaya of Asaṅga," *Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society*, n.s.vol.23, 1947.
ASBh Abhidharmasamuccayabhāṣya. N.Tatia, *Abhidharmasamuccaya-bhāṣyam*, Patna 1976.
Tr Triṃśikārikā. v.i.
TrBh Triṃśikābhāṣya. S.Lévi, *Vijñaptimātratāsiddhi*, Paris 1925.
Y Yogācārabhūmi. V.Bhattacharya, *The Yogācārabhūmi. of Asaṅga*, University of Calcutta 1957.

『五蘊論』の五位

世親の『五蘊論』に含まれる法の名目を、五位の形に整理すると次のようになる
(数字は北京版)。

色 (rūpa, ཀཟུགས་) [12b7]

四大種 (catvāri mahābhūtāni, འབྲུང་བ་ཚེན་པོ་བཞི་) [12b8]

地界 (pṛthivīdhātu, སའི་ཁམས་) [13a1]

水界 (abdhātu, རླུ་འཁམས་) [13a1]

火界 (tcjodhātu, མེ་འཁམས་) [13a1]

風界 (vāyudhātu, རླུང་གི་ཁམས་) [13a1]

所造色 (upādāyarūpa, རྒྱུ་བྱས་པའི་ཀཟུགས་) [13a2]

眼根 (cakṣur-indriya, མིག་གི་དབང་པོ་) [13a3]

耳根 (śrotra-indriya, རྟ་བའི་དབང་པོ་) [13a3]

鼻根 (ghrāna-indriya, ལྗེ་འི་དབང་པོ་) [13a4]

舌根 (jihvā-indriya, ལྗེ་འི་དབང་པོ་) [13a4]

身根 (kāya-indriya, ལུས་ཀྱི་དབང་པོ་) [13a4]

色 (rūpa, ཀཟུགས་) [13a4]

声 (śabda, ལྗང་) [13a5]

香 (gandha, རྩི་) [13a6]

味 (rasa, རོ་) [13a6]

所触一分 (spraṣṭavya-ckadeśa, རེག་བྱའི་ཚྱེགས་གཅིག་) [13a7]

無表色 (avijñapti, རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་) [13a8]

心 (citta, སེམས་)

識 (vijñāna, རྣམ་པར་ཤེས་པ་) [16b8]

心 (citta, སེམས་) [17a1]

意 (manas, ཡིད་) [17a4]

心所 (caitta, སེམས་ལས་འབྲུང་བ་) [13b4]

遍行 (sarvatraga, ལྷན་དུ་འབྲོ་བ་) [14a1]

触 (sparśa, རེག་པ་) [14a2]

作意 (manasikāra, ཡིད་ལ་བྱེད་པ་) [14a2]

受 (vedanā, ཚོར་བ་) [13a8]

想 (saṃjñā, འདུ་ཤེས་) [13b2]

思 (cetanā, སེམས་པ་) [14a3]

別境 (pratiniyataviṣaya, ཡུལ་སོ་སོར་ངེས་པ་)

欲 (chanda, འདུན་པ་) [14a3]

勝解 (adhimokṣa, མོས་པ་) [14a3]

念 (smṛti, དྲན་པ་) [14a4]

三摩地 (samādhi, རྟིང་ངེ་འཛིན་) [14a4]

慧 (prajñā, ཤེས་རབ་) [14a5]

善 (kuśala, དགེ་བ་)

信 (śraddha, དད་པ་) [14a5]

慚 (hrī, རོ་ཚ་ཤེས་པ་) [14a6]

愧 (apatrāpya, ཁྲེལ་ཡོད་པ་) [14a6]

無貪 (alobha, མ་ཚགས་པ་) [14a7]

無瞋 (adveṣa, ཞེ་མུང་མེད་པ་) [14a7]

無痴 (amoha, གཉི་མྱུག་མེད་པ་) [14a7]

精進 (vīrya, བརྩོན་འགྲུས་) [14a8]

輕安 (praśrabdhi, འིན་རྒྱ་ལྷུངས་པ་) [14a8]

不放逸 (apramāda, བག་ཡོད་) [14b1]

捨 (upekṣā, བདང་སྟོམས་) [14b2]

不害 (avihimsā, རྐམ་པར་མི་འཚོབ་) [14b3]

煩惱 (kleśa, ཉམ་མོངས་པ་)

貪 (rāga, འདོད་ཚགས་) [14b3]

瞋 (pratigha, ཁོང་ཁྲོ་བ་) [14b4]

慢 (māna, ང་རྒྱལ་) [14b4]

慢 (māna, ང་རྒྱལ་) [14b5]

過慢 (atimāna, ཚེ་བའི་ང་རྒྱལ་) [14b5]

慢過慢 (mānātimāna, ང་རྒྱལ་ལས་ཡང་ང་རྒྱལ་) [14b7]

我慢 (asmimāna, ངའོ་སྟམ་པའི་ང་རྒྱལ་) [14b7]

增上慢 (abhimāna, མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་) [14b8]

卑慢 (ūnamāna, རྒྱང་ཟད་སྟམ་པའི་ང་རྒྱལ་) [14b8]

邪慢 (mithyāmāna, ལོག་པའི་ང་རྒྱལ་) [15a1]

無明 (avidyā, མ་རིག་པ་) [15a2]

見 (dṛś, ལྟ་བ་) [15a3]

薩迦耶見 (satkāyadrṣṭi, འཇིག་ཚོགས་ལ་ལྟ་བ་) [15a4]

辺執見 (antagrāhadṛṣṭi, མཐར་འཛིན་པར་ལྟ་བ་) [15a5]

邪見 (mithyādrṣṭi, ལོག་པར་ལྟ་བ་) [15a6]

- 見取 (dr̥ṣṭiparāmarśa, ལྟ་བུ་མཚོག་ཏུ་འཛིན་པ་) [15a6]
- 戒禁取 (śilavrataparāmarśa, ཚུལ་བྱིམས་དང་བརྟུལ་ལྷགས་མཚོག་ཏུ་འཛིན་པ་) [15a7]
- 疑 (vicikitsā, ཐོ་ཚོམ་) [15a8]
- 随煩惱 (upakleśa, རྩེ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་)
- 忿 (krodha, ཁྲོ་བ་) [15b1]
- 恨 (upanahana, ཁོན་དུ་འཛིན་པ་) [15b2]
- 覆 (mrakṣa, འཚབ་པ་) [15b2]
- 惱 (pradāśa, འཚོག་པ་) [15b2]
- 嫉 (irṣya, ཐྲག་དོག་) [15b3]
- 慳 (mātsarya, མེར་སྤུ་) [15b3]
- 誑 (māyā, ལྷུ་) [15b4]
- 諂 (śāthya, ལག་ཡོ་) [15b4]
- 嬌 (mada, རྒྱགས་པ་) [15b4]
- 害 (vihimsā, རྣམ་པར་འཚོ་བ་) [15b5]
- 無慚 (āhrikyā, རོ་ཚོ་མེད་པ་) [15b5]
- 無愧 (anapatrāpya, རྩེ་མེད་པ་) [15b6]
- 昏沈 (styāna, རླུགས་པ་) [15b6]
- 掉舉 (auddhatya, རྐོད་པ་) [15b6]
- 不信 (āśraddhya, མ་དད་པ་) [15b7]
- 懈怠 (kausīdya, ལེ་ལོ་) [15b7]
- 放逸 (pramāda, བག་མེད་པ་) [15b8]
- 失念 (muṣitasmṛti, བརྗེད་ངས་པ་) [16a1]
- 散乱 (vikṣepa, རྣམ་པར་གཡེང་བ་) [16a1]
- 不正知 (asamprajanya, ཤེས་བཞིན་མ་ཡིན་པ་) [16a2]
- 不決定 (anyathātva, གཞན་དུ་ཡང་འགྱུར་བ་)
- 惡作 (kaukrīya, འཇོད་པ་) [16a3]
- 睡眠 (middha, ལགྱིད་) [16a3]
- 尋 (vitarka, རྗོག་པ་) [16a3]
- 伺 (vicāra, དཔྱེད་པ་) [16a4]
- 心不相応行 (cittaviprayuktasamskāra, བེམས་དང་མི་ལྡན་པའི་འདུ་བྱེད་) [16a4]
- 得 (prāpti, ཐོབ་པ་) [16a7]
- 無想等至 (asamjñisamāpatti, འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྣོམས་པར་འཇུག་པ་) [16a8]
- 滅尽等至 (nirodhasamāpatti, འགོག་པའི་སྣོམས་པར་འཇུག་པ་) [16b1]
- 無想所有 (āsamjñika, འདུ་ཤེས་མེད་པ་) [16b2]

- 命根 (jivendriya, སློག་གི་དབང་པོ་) [16b3]
 衆同分 (nikāyasabhāga, རིས་མཐུན་པ་) [16b4]
 生 (jāti, སྐྱེ་བ་) [16b4]
 老 (jarā, ག་བ་) [16b5]
 住 (stḥiti, གནས་པ་) [16b5]
 無常 (anityatā, མི་རྟག་པ་ཉིད་) [16b5]
 名身 (nāmakāya, མིང་གི་ཚོགས་) [16b5]
 句身 (padakāya, ཚིག་གི་ཚོགས་) [16b6]
 文身 (vyañjanakāya, ཡི་གེ་འོ་ཚོགས་) [16b6]
 異生性 (prtagjanatva, སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་ཉིད་) [16b7]
 無為 (asaṃskṛta, འདུས་མ་བྱས་) [17b3]
 虛空 (ākāśa, རྣམ་མཁའ་) [17b3]
 非折滅 (apratisaṃkhyānirodha, སོ་སོར་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པའི་འགོག་པ་) [17b4]
 折滅 (pratisaṃkhyānirodha, སོ་སོར་བརྟགས་པའི་འགོག་པ་) [17b4]
 真如 (tathatā, རེ་བཞིན་ཉིད་) [17b5]

(註)

世親の『五蘊論』の挙げる心不相応行は上の14法であるが、チベット語訳の安慧註 (P44a6-44b8) 及び地親註 (P176b5-178a1) では、「流転・定異・相応・勢速・次第・時・方・数・和合」を加えて、23法とする。

༄༅། །ཏྲུ་གར་སྐད་དུ། པ་རྩུ་སྐ་རྩུ་པ་ཀ་ར་ཅ། །
 བོད་སྐད་དུ། སྲུང་པོ་ལྗེ་འཇུ་བ་ཏུ་བྱེད་⁽¹⁾པ། །

འཇུ་བ་ཏུ་བྱེད་ཀྱི་སྲུང་པོ་ལྗེ་འཇུ་བ་ཏུ་བྱེད་^[12b7]པོ། །

སྲུང་པོ་ལྗེ་གྲུགས་ཀྱི་སྲུང་པོ་དང་། ཚོར་བའི་སྲུང་པོ་དང་། འདུ་ཤེས་ཀྱི་སྲུང་པོ་དང་། འདུ་བྱེད་
 ཀྱི་སྲུང་པོ་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སྲུང་པོ་ལོ། །

1. rūpaskandha

གྲུགས་གང་ཞེ་ན། གྲུགས་གང་ཡིན་^[12b8] པ་ཅི་ཡང་རུང་སྟེ། དེ་དག་ཐམས་ཅད་འབྲུང་བ་ཆེན་པོ་
 བཞི་དག་དང་། འབྲུང་བ་ཆེན་པོའི་⁽²⁾བཞི་དག་རྒྱར་བྱས་པ་ལོ། །

འབྲུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་དག་གང་ཞེ་ན། སའི་ཁམས་དང་། རྗེའི་ཁམས་དང་། མའི་ཁམས་དང་། ^[13a1]
 རྒྱུང་གི་ཁམས་སོ། །

དེ་ལ་སའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། སྤ་བ་ཉིད་དོ། །

རྗེའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། གཤེར་⁽³⁾བ་ཉིད་དོ། །

མའི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། ཚ་བ་ཉིད་དོ། །

རྒྱུང་གི་ཁམས་གང་ཞེ་ན། ཡང་ཞིང་^[13a2]གཡོ་བ་ཉིད་དོ། །

རྒྱར་བྱས་པའི་གྲུགས་གང་ཞེ་ན། མིག་གི་དབང་པོ་དང་། རྣ་བའི་དབང་པོ་དང་། ལྗེའི་⁽⁴⁾དབང་པོ་
 དང་། ལྗེའི་དབང་པོ་དང་། ལྷུས་^[D12a]ཀྱི་དབང་པོ་དང་། གྲུགས་དང་། སྦྲ་དང་། ^[13a3]དྲི་དང་། རྩ་
 དང་། རེག་བྱའི་ཕྱོགས་གཅིག་དང་། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་ལོ། །

དེ་ལ་མིག་གི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷུས་ཁོ་དོག་གྲུགས་དང་བའོ། །^[C12a]

རྣ་བའི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷུས་སྦྲ་གྲུགས་^[13a4]དང་བའོ། །

ལྗེའི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷུས་དྲི་གྲུགས་དང་བའོ། །

ལྗེའི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷུས་རོ་གྲུགས་དང་བའོ། །

ལྷུས་ཀྱི་དབང་པོ་གང་ཞེ་ན། ལྷུས་རེག་བྱ་གྲུགས་དང་བའོ། །

གྲུགས་^[13a5]གང་ཞེ་⁽⁵⁾ན། མིག་གི་ལྷུས་ཏེ། ཁོ་དོག་དང་། དབྱིབས་དང་། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་དོ། །

སྦྲ་གང་ཞེ་ན། རྣ་བའི་ལྷུས་ཏེ། ཟིན་བ་དང་མ་ཟིན་བ་དང་གཉི་གའི་སྟེ། འབྲུང་བ་ཆེན་པོ་བཞིའི་རྒྱ་
 ལས་བྱུང་བའོ། །^[13a6]

如薄伽梵略說五蘊。一者色蘊。二者受蘊。三者想蘊。四者行蘊。五者識蘊。

云何色蘊。謂四大種及四大種所造諸色。云何

四大種。謂地界水界火界風界。

云何地界。謂堅強性。

云何水界。謂流濕性。

云何火界。謂溫燥性。

云何風界。謂輕等動性。

云何四大種所造諸色。謂眼根耳根鼻根舌根身根。色聲香味觸一分無表色等。

云何眼根。謂色爲境清淨色。

云何耳根。謂聲爲境清淨色。

云何鼻根。謂香爲境清淨色。

云何舌根。謂味爲境清淨色。

云何身根。謂所觸爲境清淨色。

云何爲色。謂眼境界。顯色形色及表色等。

云何爲聲。謂耳境界。執受大種因聲。非執受大種因聲。俱大種因聲。

色 [12b7]

ASBh p.3,3: catvāri ca mähābhūtāny upādāyati.

四大種

AKBh p.8,21-22: kharah pṛthivīdhātuḥ. sneho 'bdhātuḥ. uṣṇatā tejodhātuḥ. īraṇā vāyudhātuḥ.

所造色 [13b2]

AK 9cd: tadvijñānāśrayā rūpaprasādāś caḥṣurādayaḥ. Cf. AK13h 22,4ff.

Y p.4,9-10: caḥṣuḥ katamat...caḥṣurvijñānasamñīśrayo rūpaprasādo...

Y p.6,7-8: śrotraṃ katamat...śrotravijñānasamñīśrayo rūpaprasādo...

Y p.7,8-9: ghrāṇaṃ katamat...ghrānavijñānasamñīśrayo rūpaprasādo...

Y p.8,1-2: jihvā katamā...jihvāvijñānasamñīśrayo rūpaprasādo...

Y p.8,16-17: kāyaḥ katamaḥ...kāyavijñānasamñīśrayo rūpaprasādo...

Y p.4,12-14: caḥṣurvijñānasyālambanaṃ katamat. yad rūpaṃ sanidarśanaṃ sapratighaṃ. tat punar anekavidhaṃ. samāsato varṇaḥ samsthānaṃ vijñaptīś ca.

Y p.6,14-15: sa punar upāttamahābhūtaḥetuko 'nupāttamahābhūtaḥetuka upāttānupāttamahābhūtaḥetukaś ca.

ASBh p.3,17-18: lakṣaṇataḥ śrotrendriyagrāhyo yo 'rtha iti.

དྲི་གང་ཞེ་ན། ལྷའི་ཡུལ་ཏེ། དྲི་ཞི་མ་པ་^[N13a]དང་། དྲི་ང་བ་དང་། དེ་ལས་གཞན་པ་ལོ། །
རོ་གང་ཞེ་ན། ལྷའི་ཡུལ་ཏེ། མངར་བ་དང་། ལྷུང་བ་དང་། ལན་ཚྭ་དང་། ཚོ་བ་དང་། ལ་བ་དང་།
བསྐྱེ་བ་ཞེས་^[13a7]བྱའོ། །

རེག་བྱའི་ཕྱོགས་གཅིག་གང་ཞེ་ན། ལུས་ཀྱི་ཡུལ་ཏེ། འབྲུང་བ་ཆེན་པོ་རྣམས་བཞག་སྟེ། འཇམ་པ་
ཉིད་དང་། ལྷུབ་པ་ཉིད་དང་། ལྷི་བ་ཉིད་དང་། ཡང་བ་ཉིད་དང་། གང་བ་ཉིད་དང་། ^[13a8]བཀྲེས་པ་ཉིད་
དང་། སྐྱེ་བ་⁽⁹⁾པ་ལོ། །

རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་དང་། ཉིང་ངེ་འཛོལ་ལས་བྱུང་བའི་
གཟུགས་ཏེ། བསྐྱེད་དུ་མེད་ལ་ཐོགས་པ་མེད་པ་ལོ།⁽⁷⁾ །

2. vedanāskandha

ཚོར་བ་གང་ཞེ་ན། ^[13b1]མྱོང་བ་རྣམ་པ་གསུམ་⁽⁸⁾སྟེ། བདེ་བ་དང་། ལྷུག་བསྐྱེད་བ་དང་། ལྷུག་
བསྐྱེད་⁽⁹⁾ཡང་མ་ཡིན། བདེ་བ་ཡང་⁽¹⁰⁾མ་ཡིན་པ་སྟེ།⁽¹¹⁾ བདེ་བ་ནི་⁽¹²⁾གང་འགགས་ན། ཐུད་པར་འདོད་
པ་ལོ། །

ལྷུག་བསྐྱེད་ནི་གང་བྱུང་ན། བུལ་^[13b2]བར་འདོད་པ་ལོ། །
བདེ་བ་ཡང་མ་ཡིན། ལྷུག་བསྐྱེད་བ་ཡང་མ་ཡིན་པ་ནི་གང་བྱུང་ན། གཉིས་ཀར་འདོད་པར་མི་
འལྷར་བ་ལོ། །

3. samjñāskandha

འདུ་ཤེས་གང་ཞེ་ན། ཡུལ་ལ་མཚན་མར་འཛོལ་པ་ལོ། །

དེ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། ^[13b3]ཚུང་དུ་དང་། རྒྱ་ཆེན་པོར་ལྷུང་བ་དང་། ཚད་མེད་པ་ལོ། །

4. saṃskāraṣkandha

འདུ་བྱེད་རྣམས་གང་ཞེ་ན། ཚོར་བ་དང་འདུ་ཤེས་ལས་གཞན་པ་⁽¹³⁾སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་⁽¹⁴⁾
རྣམས་དང་། ^[D12b]སེམས་དང་ལྡན་པ་མ་ཡིན་པ་^[13b4]རྣམས་⁽¹⁵⁾ལོ། །

4.a. caitta

དེ་ལ་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་རྣམས་ཀྱང་གང་ཞེ་ན། ཚོས་གང་དག་སེམས་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་
པ་རྣམས་⁽¹⁶⁾ལོ། །

云何爲香。謂鼻境界。好香惡香及所餘香。

〔云何爲味。謂舌境界。甘味酢味鹹〔酸〕

味辛味苦味淡味。

云何爲所觸一分。謂身境界。除四大種。餘所造觸。滑性澁性重性輕性冷飢渴等

云何名爲無表色等。謂有表業及三摩地所生色等無見無對。

云何受蘊。謂三。領納。一苦二樂三不苦不樂。

樂謂滅時有和合欲。

苦謂生時有乖離欲。

不苦不樂謂無二欲。

云何想蘊。謂於境界取種種相。

云何行蘊。謂除受想。諸餘心法及心不相應行。

云何名爲諸餘心法。爲彼諸法與心相應。

AKBh p.7,6-7: trividhas tu sâstre. sugandho durgandhaḥ samagandha iti.

AKBh p.7,4: madhura-amla-lavana-katuka-tikta-kaṣāya-bhedāt.

AKBh p.7,9-10: catvāri mahābhūtāni ślakṣṇatvaṃ karkaśatvaṃ gurutvaṃ laghutvaṃ śītaṃ jighatsā pipāsā ccti.

AKBh p.8,9-10: samāsatas tu vijñaptisamādhisambhūtaṃ kuśalākuśalarūpam **avijñaptiḥ**.

受 [13a8]

AKBh p.10,14: trividho 'nubhavo **vedanāskandhaḥ**. sukho duḥkho 'duḥkhāsukhaś ca.

TrBh p.20,16-18: **vedanā** anubhavasvabhāvā... tridhā bhavati. sukhā. dhḥkhā. aduḥkhāsukhā ca.

TrBh p.20,23-p.21,1: tatra sukho 'nubhavaḥ yasminn utpanne 'viyogecchā niruddhe ca punaḥ saṃyogecchā jāyate. duḥkho 'nubhavaḥ yasminn utpanne viyogecchā niruddhe ca punar asaṃyogecchā. aduḥkhāsukho yasminn utpanne niruddhe cobhayaṃ na jāyate.

想 [13b2]

AKBh p.54,20-21: **saṃjñā** saṃjñānaṃ viṣayanimittodgrahaḥ.

TrBh p.21,2: **saṃjñā** viṣayanimittodgrahaṇaṃ.

行 [13b4]

AS p.15,11-12: itīyaṃ cetaṇāṃ vedanāṃ saṃjñāṃ ca sthāpayitvā tadanya caitasikā dharmās cittaviprayuktās ca saṃskārāḥ **saṃskāraskandha** ity ucyate.

དེ་དག་གྲང་གང་ཞེ་ན། རེག་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དང་། ཚོར་བ་ [13b5] དང་། འདུ་ཤེས་དང་།
 སེམས་[C12b] པ་དང་། འདུན་པ་དང་། མོས་པ་དང་། དུན་པ་དང་། ཉིང་འཛོལ་ (17) དང་། ཤེས་རབ་
 དང་། དད་པ་དང་། འོ་ཚོ་ཤེས་པ་དང་། ལྷལ་ཡོད་པ་དང་། མ་ཆགས་པའི་ [13b6] དགེ་བའི་ཚ་ (18) བ་
 དང་། ཞེ་སྤང་མེད་པའི་དགེ་བའི་ཚ་བ་དང་། གཏི་སྤྲུག་མེད་པའི་དགེ་བའི་ཚ་བ་དང་། བརྩོན་འགྲུས་
 དང་། ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་དང་། བག་ཡོད་པ་དང་། བཏང་སྤོམས་དང་། རྣམ་པར་མི་ [13b7] འཚོ་བ་དང་།
 འདོད་ཆགས་དང་། ཁོང་ཁོ་བ་དང་། འཇུག་དང་། མ་རིག་པ་དང་། ལྷ་བ་དང་། ཐེ་ཚོམ་དང་། ཁྲོ་བ་
 དང་། ཁོར་དུ་འཛོལ་བ་ [N13b] དང་། འཆབ་པ་དང་། འཚོག་པ་དང་། སྤྲུག་ (19) རྟོག་དང་། [13b8] སེར་སྣ་
 དང་། སྣ་དང་། གཞེ་དང་། རྒྱགས་པ་དང་། རྣམ་པར་འཚོ་བ་དང་། འོ་ཚོ་མེད་པ་དང་། ལྷལ་མེད་པ་
 དང་། རྒྱགས་པ་དང་། རྟོན་པ་དང་། མ་དད་པ་དང་། ལེ་ལོ་དང་། བག་མེད་པ་དང་། བརྟེན་ངས་པ་
 དང་། [14a1] རྣམ་པར་གཡོངས་པ་ (20) དང་། ཤེས་ (21) བཞིན་མ་ཡིན་པ་དང་། འགྲོད་ (22) བ་དང་། གཉིན་
 དང་། རྟོག་པ་དང་། དཔྱད་པའོ། །

དེ་རྣམས་ལས་ཇ་ནི་ཀུན་དུ་འགྲོ་བའོ། །ཇ་ནི་ཡུལ་སོ་སོར་ངེས་པའོ། །བཅུ་གཅིག་ནི་ [14a2] དགེ་
 བའོ། །དུག་ནི་ཉེན་མོངས་པའོ། །ལྷག་མ་རྣམས་ནི་ཉེ་བའི་ཉེན་མོངས་པའོ། །བཞི་ནི་གཞན་དུ་ཡང་འཇུར་
 བའོ། །

4.a.1. sarvatraga

རེག་པ་གང་ཞེ་ན། གསུམ་འདུས་ནས་ཡོངས་སུ་གཙོད་པའོ། །
 ཡིད་ལ་བྱེད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་[14a3] གྱི་(23)འཇུག་པའོ། །
 སེམས་པ་གང་ཞེ་ན། ཡོན་ཏན་དང་། ཉེས་ (24) བ་དང་། གཉི་ག་མ་ཡིན་པ་ཡིན་པ་ལ་སེམས་མངོན་
 པར་འདུ་བྱེད་པ་ཡིད་ཀྱི་ལས་སོ། །

4.a.2. pratiniyataviṣaya

འདུན་པ་གང་ཞེ་ན། བསམ་པའི་དངོས་པོ་ལ་འདོད་པའོ། །
 མོས་པ་གང་ཞེ་ན། [14a4] ངེས་པའི་དངོས་པོ་ལ་དེ་བཞིན་དུ་ངེས་པར་འཛོལ་བའོ། །
 དུན་པ་གང་ཞེ་ན། འདུས་པའི་དངོས་པོ་ཉིད་མ་བརྟེན་པ་སྟེ། སེམས་ཀྱི་མངོན་པར་བརྟེན་པ་ཉིད་དོ། །
 ཉིང་འཛོལ་གང་ཞེ་ན། བརྟག་པའི་ [D13a] དངོས་པོ་ལ་སེམས་ཚེ [14a5] གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །
 ཤེས་རབ་གང་ཞེ་ན། དེ་དག་ཉིད་ལ་རབ་དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་སྟེ། རིགས་ (25) བ་དང་། རིགས་པ་མ་
 ཡིན་པས་བསྐྱེད་པ་དང་། གཞན་པའོ། །

彼復云何。謂觸作意受想思。欲勝解念三摩地
慧。信慚愧無貪善根無瞋善根無癡善根精進輕
安不放逸捨不害。貪瞋慢無明見疑。忿恨覆惱
嫉輕誑詔惱害無慚無愧。沈掉舉不信懈怠放
逸忘念散亂不止知。惡作睡眠尋伺。
是諸心法。五是遍行。五是別境。十一是善。六
是煩惱。餘是隨煩惱。四是不決定。

云何爲觸。謂三和合分別爲性。

云何作意。謂能令心發悟爲性。

云何爲思。謂於功德過失及俱相違。令心造作
意業爲性。

云何爲欲。謂於可愛事希望爲性。

云何勝解。謂於決定事即如所了印可爲性。

云何爲念。謂於串習事令心不忘明記爲性。

云何三摩地。謂於所觀事令心一境不散爲性。

云何爲慧。謂即於彼擇法爲性。或如理所引。或
不如理所引。或俱非所引。

遍行

AS p.15,18-p.16,1: **sparśaḥ** katamaḥ. trikasannipāta indriyavikāraparicchadaḥ.

TrBh p.20,2-3: tatra **sparśas** trikasamnipāte indriyavikāraparicchadaḥ.

AS p.15,18: **manaskāraḥ** katamaḥ. cetasa ābhogaḥ.

TrBh p.20,11-12: **manaskāras** cetasa ābhogaḥ.

AS p.15,17: **cetanā** katamā. cittābhisamskāro manaskarma.

TrBh p.21,4: **cetanā** cittābhisamskāro manasaś ceṣṭā.

別境

AS p.16,1-2: **chandaḥ** katamaḥ. ipsite vastuni tat tad upasaṃhatā kartukāmataḥ.

TrBh p.25,22: tatra **chando** 'bhiprete vastuny abhilASaḥ.

AS p.16,2-3: **adhimokṣaḥ** katamaḥ. niścite vastuni yathāniścayaṃ dhāraṇā.

TrBh p.25,25-26: **adhimokṣo** niścite vastuni tathaiṣādhāraṇaṃ.

AS p.16,3-4: **smṛtiḥ** katamā. samstute vastuni cetaso 'saṃpramoṣaḥ.

TrBh p.25,30-26,1: **smṛtiḥ** samstute vastuny asaṃpramoṣaś cetaso 'bhillapanatā.

AS p.16,4: **samādhiḥ** katamaḥ. upaparikṣye vastuni cittasyaikāgratā.

TrBh p.26,5: **samādhirūpaprikṣe** vastuni cittasyaikāgratā.

AS p.16,5: **prajñā** katamā. upaparikṣya cva vastuni dharmāṇāṃ pravīcayāḥ.

TrBh p.26,7-8: dhīḥ **prajñā**. sāpy upaparikṣya cva vastuni pravīcayo yogāyogavihiito
'nyathā vcti.

4.a.3. kuśāla

དད་པ་གང་ཞེ་ན། ལས་དང་འགྲུས་བྱ་དང་། བདེན་པ་དང་། [14a6] དཀོན་མཚོག་ལ་མངོན་པར་ཡིད་
ཚེས་པ་དང་། [C13a] འདོད་པ་དང་། སེམས་དང་བཤོ། །

ངོ་ཚ་ཤེས་པ་གང་ཞེ་ན། བདག་གསུམ་ཚོས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་སྟེ། ཁ་ན་མ་གོ་བས་འཛོམ་⁽²⁶⁾པའོ། །
ཁྲེལ་ཡོད་པ་གང་ཞེ་ན། འཇིག་རྟེན་གྱི་^[14a7] དབང་དུ་བྱས་ཏེ་ཁ་ན་མ་གོ་བས་⁽²⁷⁾འཛོམ་པའོ། །
མ་ཚགས་པ་གང་ཞེ་ན། ཚགས་པའི་གཉེན་པོ་སྟེ། ཡིད་བྱང་ཞིང་མི་ཡེན་པའོ། ཞེ་སྐྱབ་མེད་པ་གང་ཞེ་
ན། ཞེ་སྐྱབ་གི་གཉེན་པོ་སྟེ་བྱམས་པའོ། །

གདོ་སྤྱོད་^[14a8] མེད་པ་གང་ཞེ་ན། གདོ་སྤྱོད་གི་གཉེན་པོ་སྟེ་⁽²⁸⁾ ཡང་དག་པ་ལ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་
པའོ། །

བརྩོན་འགྲུས་གང་ཞེ་ན། ལེ་ལེའི་^[N14a] གཉེན་པོ་སྟེ། དགོ་བ་ལ་སེམས་མངོན་པར་སྟོོ་བའོ། །
ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་གང་ཞེ་ན། གནས་^[14b1] འདྲ་ཡེན་གྱི་⁽²⁹⁾ གཉེན་པོ་སྟེ། ལྷས་དང་སེམས་ལས་སྤངས་
བ་ཉིད་དོ། །

བག་ཡོད་པ་གང་ཞེ་ན། བག་མེད་པའི་གཉེན་པོ་སྟེ། མ་ཚགས་པ་ནས་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་བར་དེ་དག་
ལ་གནས་ནས་མི་དགོ་བའི་ཚོས་སྤང་⁽³⁰⁾ཞིང་། དེའི་^[14b2] གཉེན་པོ་དགོ་བའི་ཚོས་རྣམས་བསྐྱོམ་པའོ། །
བདང་སྟོམས་གང་ཞེ་ན། མ་ཚགས་པ་ནས་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་བར་དེ་དག་ཉིད་ལ་གནས་གིང་སེམས་
མཉམ་པ་ཉིད་དང་། སེམས་རྣལ་དུ་འདུག་པ་དང་། སེམས་ལྡན་གྱིས་གྲུབ་^[14b3] པ་ཡང་ཐོབ་པ་སྟེ། གང་
གི་⁽³¹⁾ཉོན་⁽³²⁾མོངས་པ་ཅན་གྱི་⁽³³⁾ཚོས་རྣམས་བས་ལ་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་མེད་པར་གནས་པ་ཉིད་དོ། །
རྣམ་པར་མི་འཚོ་བ་གང་ཞེ་ན། རྣམ་པར་⁽³⁴⁾འཚོ་བའི་གཉེན་པོ་སྟེ། སྟིང་ཇེ་བའོ། །

4.a.4. kleśa

འདོད་ཚགས་^[14b4] གང་ཞེ་ན། ཉེ་བར་ཡེན་པའི་སྤང་བོ་ལྷ་⁽³⁵⁾ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་དང་། ལྷག་པར་
ཚགས་པའོ། །

ཁོང་ཁྱོད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཀུན་ནས་མཉམ་སེམས་པའོ། །
ང་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ང་རྒྱལ་རྣམས་པ་བདུན་སྟེ་⁽³⁶⁾ [14b5] ང་རྒྱལ་དང་། ཚེ་བའི་ང་རྒྱལ་དང་། ང་རྒྱལ་
ལས་ཀྱང་ང་རྒྱལ་དང་། འདོ་སྦྱམ་པའི་ང་རྒྱལ་དང་། མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་^[D13b] དང་། ཅུང་ཟད་སྦྱམ་པའི་
ང་རྒྱལ་དང་། འོག་པའི་ང་རྒྱལ་ལོ། །

ང་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། རྒྱང་དུ་⁽³⁷⁾བསམ་བདག་^[14b6] ཚེ་བའམ། མཚུངས་པ་དང་མཚུངས་སོ་སྦྱམ་དུ་
སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

云何爲信。謂於業果諸諦實中。極正符順心淨爲性。
 云何爲慚。謂白增上及法增上。於所作罪羞恥爲性。
 云何爲愧。謂世增上於所作罪羞恥爲性。
 云何無貪。謂貪對治。令深厭患無著謂性。
 云何無瞋。謂瞋對治。以慈爲性。
 云何無癡。謂癡對治。以其如實正行爲性。
 云何精進。謂懈怠對治。心於善品勇悍爲性。
 云何輕安。謂危重對治。身心調暢堪能爲性。
 云何不放逸。謂放逸對治。即是無貪乃至精進依止此故。捨不善法。及即修彼對治善法。
 云何爲捨。謂即無貪乃至精進依止此故。獲得所有心平等性心正直性心無發悟性。又由此故於已除遺染污法中無染安住。
 云何不害。謂害對治。以悲爲性。
 云何爲貪。謂於五取蘊染愛耽著爲性。
 云何爲瞋。謂於有情樂作損害爲性。
 云何爲慢。所謂七慢。一慢。二過慢。三慢過慢。四我慢。五增上慢。六卑慢。七邪慢。
 云何慢。謂於劣計已勝。或於等計已等。心高舉爲性。

善[14a5]

TrBh p.26,24-25: tatra śraddhā karmaphalasatyaratnceṣv abhisampratyayah prasādaś cetaso 'bhilāṣaḥ.

TrBh p.26,30-31: hrīr ātmānaṃ dharmāṃ vādhipatiṃ kṛtvāvadyena lajjā.

TrBh p.27,2-3: apatrāpyaṃ lokam adhipatiṃ kṛtvāvadyena lajjā.

TrBh p.27,4-6: alobho lobhapratipakṣaḥ... tatpratipakṣo 'lobho bhav bhavopakaraṇeṣu cānāsaktiḥ vaimukhyaṃ ca.

TrBh p.27,7: adveṣo dveṣapratipakṣo maitrī.

TrBh p.27,10: amoho mohapratipakṣaḥ. ayathābhūtasampratipattir mohāḥ.

TrBh p.27,12-13: vīryaṃ kausidyapratipakṣaḥ. kuśalc cetaso 'bhysāhaḥ.

TrBh p.27,14-15: praśrabdhir dauṣṭhulyapratipakṣaḥ kāyacittakarmanyatā.

TrBh p.27,25-27: tatrāpramādaḥ pramādhapratipakṣaḥ. alobhād yāvad vīryam aprasādaḥ. yair alobhādīn niśrityā kuśalān dharmān prajahāti tatpratipakṣāś ca kuśalān dharmān bhāvayati.

TrBh p.27,29: upekṣā cittasamatā cittaprasāthatā cittānābhogatā.

TrBh p.28,5-6: iyaṃ ca sarvakleśopakleśānavakāśasamniśrayadānakarmikā.

TrBh p.28,6: avihimsā vihiṃsāpratipakṣaḥ.

TrBh p.28,8: kāruṇiko hi paraduḥkhaduḥkhī bhavatīti.

煩惱 [14b3]

TrBh p.28,13-14: tatra rāgo bhavabhogayor adhyavasānaṃ prārthanā ca.

TrBh p.28,16: pratighaḥ satveṣv āghātaḥ...

TrBh p.29,4-6: hināt kulavijñānavittādibhiḥ śreyān asmi kulavijñānavittādibhir iti yā cittasyonnatīḥ sadṛśca vā kulādibhir eva sadṛśo 'smiti yā cittasyonnatīḥ sa mānaḥ.

ཆེ་བའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། མཚུངས་པ་བས་བདག་ཆེ་བའམ། ཆེ་བ་དང་མཚུངས་སོ་སྐྱམ་དུ་སེམས་
ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། ། [14b7] [C13b]

ད་རྒྱལ་ལས་ཀྱང་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ཆེ་ (38)བས་ཀྱང་བདག་ཆེ་འོ་སྐྱམ་དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་
པའོ། །

དའོ་སྐྱམ་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ (39)ན། ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཤུང་པོ་ལྔ་པོ་རྣམས་ལ་བདག་གསལ་བདག་གིར་
ལྷ་བའི་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། ། [14b8]

མངོན་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། གོང་མའི་ཁྱད་པར་ཐོབ་པར་བྱ་བ་མ་ཐོབ་པར་བདག་གིས་ཐོབ་པོ་སྐྱམ་
དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

ཅུང་ཟད་སྐྱམ་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ཁྱད་པར་(41)ཆེས་འཕགས་[15a1] པ་བས་བདག་ཅུང་ཟད་རྒྱང་དོ་
སྐྱམ་དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

ལོག་པའི་ད་རྒྱལ་གང་ཞེ་ན། ཡོན་ [N14b] ཉན་མ་ཡིན་པ་དང་ལྡན་པ་ལ་བདག་ཡོན་ཉན་དང་ལྡན་ལོ་
སྐྱམ་དུ་སེམས་ཁེངས་པ་གང་ཡིན་[15a2] པའོ། །

མ་རིག་པ་གང་ཞེ་ན། ལས་དང་འབྲས་བུ་དང་བདེན་པ་དང་། དཀོན་མཚོག་རྣམས་མི་ཤེས་པ་དེ། དེ་
ལང་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་པ་དང་། ཀྱན་དུ་བརྟགས་པའོ། །

འདོད་པ་ན་སྦྱོད་པའི་འདོད་ཆགས་དང་། ཁོང་ཁྱོད་པ་དང་། [15a3] འདོད་པ་ན་སྦྱོད་པའི་མ་རིག་པ་དེ་
དག་ནི་མི་དགེ་བའི་ཚ་བ་གསུམ་སྟེ། ཆགས་པ་དང་ཞེ་སྤང་དང་གཏི་མུག་(42)མི་དགེ་བའི་ཚ་བའོ། །

ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། ལྷ་བ་ལྔ་སྟེ། འཇིག་ཚོགས་(43)ལ་ལྷ་བ་དང་། མཐར་འཛིན་པར་ [15a4] ལྷ་བ་དང་།
ལོག་པར་ལྷ་བ་དང་། ལྷ་བ་མཚོག་ཏུ་འཛིན་པ་དང་། རྒྱལ་ཁྲིམས་དང་། བརྒྱལ་ཁྲིམས་མཚོག་ཏུ་འཛིན་
པའོ། །

འཇིག་(44)ཚོགས་ལ་ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཤུང་པོ་ལྔ་པོ་རྣམས་ལ་བདག་ [15a5] གསལ་བདག་
གིར་ལྷ་བའི་ཤེས་རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། །

མཐར་འཛིན་པར་ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། དེ་ཉིད་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ། རྟག་པའམ་ཆད་པར་ལྷ་བའི་ཤེས་
རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། ། [15a6]

ལོག་པར་ལྷ་བ་གང་ཞེ་ན། རྒྱ་ [D14a] འམ་འབྲས་བུའམ། རྱེད་པ་ལ་སྐྱར་པ་འདེབས་པ་དང་། ཡོད་
པའི་དངོས་པོ་ལ་འཇིག་(45)པའི་ཤེས་རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། །

ལྷ་བ་མཚོག་ཏུ་འཛིན་པ་གང་ཞེ་ (46)ན། ལྷ་བ་ [15a7] རྣམ་པ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ཉིད་དང་། དེའི་གནས་
ཤུང་པོ་རྣམས་ལ་མཚོག་དང་གཙོ་བོ་དང་། ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་དང་། དམ་པར་ལྷ་བའི་ཤེས་རབ་
ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། །

云何過慢。謂於等計已勝。或於勝計已等。心高舉爲性。
 云何慢過慢。謂於勝計已勝。心高舉爲性。
 云何我慢。謂於五取蘊隨觀爲我或爲我所。心高舉爲性。
 云何增上慢。謂於未得增上殊勝所證法中。謂我已得。心高舉爲性。
 云何卑慢。謂於多分殊勝計已少分。下劣心高舉爲性。
 云何邪慢。謂實無德計已有德。心高舉爲性。
 云何無明。謂於業果及諦實中無智爲性。此復二種。所謂俱生分別所起。又欲纏貪瞋及欲纏無明。名三不善根。謂貪不善根。瞋不善根。癡不善根。
 云何爲見。所謂五見。一薩迦耶見。二邊執見。三邪見。四見取。五戒禁取。
 云何薩迦耶見。謂於五取蘊隨觀爲我或爲我所。染污慧爲性。
 云何邊執見。爲即由彼增上力故。隨觀爲常或復爲斷。染污慧爲性。
 云何邪見。謂或謗因。或復謗果。或謗作用。或壞善事。染污慧爲性。
 云何見取。謂即於三見及彼所依諸蘊。隨觀爲最爲上爲勝爲極。染污慧爲性。

TrBh p.29,7-8: kulavijñānaviitādibhiḥ sadṛśāt tyāgaśīlapauruṣādibhiḥ śreyān asmi śreyasā vākulavidyādibhiḥ sadṛśo 'smi vijñānavittādibhir ity ayam atīmānaḥ.

TrBh p.29,9-10: śreyasaḥ kulavijñānavittair aham eva śreyān kulavijñānavittair iti yā cittasyonnatir ayam mātīmānaḥ.

TrBh p.29,10-11: pañcasūpādānaskandheṣv ātmātmīyarahiteṣv ātmātmīyābhiniveśādyā cittasyonnatiḥ so 'smimānaḥ.

TrBh p.29,12: aprāpta uttare viśeṣādhiḡame prāpto mayoti yācittasyonnatiḥ so 'bhimānaḥ.

TrBh p.29,13-14: bahvantaraviśiṣṭāt kulavidyādibhir alpāntarahīno 'smi kulavidyādibhir iti yā cittasyonnatir ayam ūnamānaḥ.

TrBh p.29,14-15: aguṇavato guṇavān asmīti yā cittasyonnatiḥ sa mithyāmānaḥ.

無明

TrBh p.28,23-24: moho 'pāyeṣu sugatau nirvāṇe tatpratiṣṭhāpakeṣu hetuṣu teṣāṃ cāvīparīte hetuphalasāmbandhe yad ajñānam.

AK V,20ab: kāme 'kuśalamūlāni rāgapratighamūḡhayaḥ.

AKBh p.291,7-8: "trīṇy akuśalamūlāni (AK I,20c)" lobho 'kuśalamūlaṃ dveṣo moho 'kuśalamūlam.

見

TrBh p.29,21: satkāyadṛṣṭir yat pañcasūpādānaskandheṣv ātmātmīyadarśanam.

TrBh p.29,21-22: antagrāhadṛṣṭis teṣv eva pañcasūpādānaskandheṣv ātmātmīyatvena ḡrḡheṣu yad ucchedataḥ śāśvatato vā darśanam.

TrBh p.29,23-24: mithyādṛṣṭiḥ. yayā mithyādṛṣṭyā hetuṃ vāpavadati phalaṃ kriyāṃ vā sad vā vastu nāśayati.

TrBh p.29,24-25: dṛṣṭiparāmarśaḥ. pañcasūpādānaskandheṣv agrato viśiṣṭataḥ śreṣṭhataḥ paramatāś ca yaddarśanam.

ཚུལ་ཁྲིམས་དང་བརྟུལ་ [15a8] ལུགས་མཚོག་ [C14a] ཏུ་འཛིན་པ་གང་ཞེ་ན། ཚུལ་ཁྲིམས་དང་བརྟུལ་
ལུགས་དང་། དེ་ལོ་གནས་སྤང་པོ་རྣམས་ལ་དག་པ་དང་། མྱོལ་བ་དང་ངེས་པར་འབྱིན་པར་ལྷ་⁽⁴⁷⁾བའི་ཤེས་
རབ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གང་ཡིན་པའོ། །

ཐེ་ཚོམ་གང་ཞེ་ན། [15b1] བདེན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་གང་ཡིད་གཉིས་བ་པའོ། །
ཉོན་མོངས་པ་དེ་དག་ལས་ལྷ་བའོག་མ་གསུམ་དང་། ཐེ་ཚོམ་ནི་ཀུན་ཏུ་བརྟགས་པའོ། །
ལྷག་མ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་དང་། ཀུན་ཏུ་བརྟགས་པའོ། །

4.a.5. upakleśa

ཁྲོ་བ་གང་ཞེ་ན། [15b2] འཕྲལ་དུ་གཞོད་པ་བྱེད་པ་ལ་གནས་ཏེ། གང་སེམས་ཀྱི་ཀུན་ནས་མནར་
སེམས་པའོ། །

ཁོན་དུ་འཛིན་པ་གང་ཞེ་ན། མཉམ་པར་འཛིན་པའོ། །
འཚབ་པ་གང་ཞེ་[N15a] ན། བདག་གི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མཁུང་པའོ། །
འཚོག་[15b3] པ་གང་ཞེ་ན། ཚོག་བརྒྱུད་པོས་ཞེར་འདེ་བས་པ་ཉིད་དོ། །
ཕྲག་དོག་གང་ཞེ་ན། གཞན་གྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་སེམས་ཁོང་ནས་འབྱུག་⁽⁴⁹⁾པའོ། །
སེར་སྒ་གང་ཞེ་ན། སྦྱིན་པ་དང་མི་མཐུན་པའི་སེམས་ཀྱི་⁽⁵⁰⁾ཀུན་ཏུ་[15b4] འཛིན་པའོ། །
སྐྱུ་གང་ཞེ་ན། གཞན་སྐྱུ་བ་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་དོན་སྟོན་པའོ། །
གཡོ་གང་ཞེ་ན། བདག་གི་ཉེས་པ་བཅབ་པའི་ཐབས་གཟུང་⁽⁵¹⁾སྟེ་སེམས་ཀྱི་བྱ་བའོ། །
རྒྱགས་པ་གང་ཞེ་ན། བདག་གི་[15b5] ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་ཆགས་པའི་རབ་དུ་དགའ་བདེ་སེམས་⁽⁵²⁾
ཡོངས་སུ་འཛིན་པའོ། །

རྣམ་པར་འཚོ་བ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཐོ་འཚོམས་⁽⁵³⁾པའོ། །
ངོ་ཚོ་མེད་པ་གང་ཞེ་ན། ཁ་ན་མ་ཐོ་བས་བདག་[15b6] ལ་མི་འཛོམ་⁽⁵⁴⁾པའོ། །
ཁྲེལ་མེད་པ་གང་ཞེ་ན། ཁ་ན་མ་ཐོ་བས་གཞན་ལ་མི་འཛོམ་⁽⁵⁵⁾པའོ། །
སྐྱགས་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ལས་སུ་མི་རུང་བ་སྟེ། སྟོང་⁽⁵⁶⁾བ་ཉིད་དོ། ། [D14b]
ཚོད་པ་གང་ཞེ་ན། སེམས་རྣམ་པར་མ་[15b7] ཞི་བའོ། །
མ་དད་པ་གང་ཞེ་ན། ལས་དང་འབྲས་བུ་དང་། བདེན་པ་དང་། དཀོན་མཚོག་རྣམས་ལ་ཡིད་མི་ཆེས་
པ་དང་། སེམས་⁽⁵⁷⁾མ་དད་པ་སྟེ། དད་པའི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་སོ། །
ལེ་ལོ་གང་ཞེ་ན། [15b8] དགོ་བ་ལ་སེམས་མངོན་པར་སྟོ་བ་མེད་པ་སྟེ། བརྟོན་འགྲུས་ཀྱི་མི་མཐུན་པའི་
ཕྱོགས་⁽⁵⁸⁾སོ། །

བག་མེད་པ་གང་ཞེ་ན། ཆགས་པ་དང་། ཞེ་སྤང་ [C14b] དང་། གཏི་སྐྱག་དང་། ལེ་ལོ་གང་ཡིན་པ་
དག་གིས་ཉོན་མོངས་པ་[16a1] ལས་སེམས་མི་སྤང་བ་དང་དགོ་བ་མི་བསྐྱོམ་པའོ། །

云何戒禁取。謂於戒禁及彼所依諸蘊。隨觀爲清淨爲解脫爲出離。染污慧爲性。
 云何爲疑。謂於諦等猶豫爲性。諸煩惱中後三見及疑唯分別起。餘通俱生及分別起。
 云何爲忿。謂遇現前不饒益事心損惱爲性。
 云何爲恨。謂結怨不捨爲性。
 云何爲覆。謂於白罪覆藏爲性。
 云何爲惱。謂發暴惡言尤如爲性。
 云何爲嫉。謂於他盛事心妬爲性。
 云何爲慳。謂施相違心恪爲性。
 云何爲誑。謂爲誑他詐現不實事爲性。
 云何爲諂。謂覆藏白過方便所攝心曲爲性。
 云何爲憤。謂於白盛事染著倨傲心恃爲性。
 云何爲害。謂於諸有情損惱謂性。
 云何無慚。謂於所作罪不自羞恥爲性。
 云何無愧。謂於所作罪不羞恥他謂性。
 云何惜沈。謂心不調暢無所堪能蒙昧爲性。
 云何掉舉。謂心不寂靜爲性。
 云何不信。謂信所對治。於業果等不正信順。心不清淨爲性。
 云何懈怠。謂精進所治。於諸善品心不勇猛爲性。
 云何放逸。謂即由貪瞋癡懈怠故。於諸煩惱心不防護。於諸善品不能修習爲性。

TrBh p.29,26-27: śīlavrataparāmarśaḥ. pañcasūpādānaskandheṣu śuddhito muktito nairyānikataś ca yaddarśanam.

TrBh p.29,27: vicikitsā. karmaphalasatyaratneṣu vimatiḥ. vividhāmātir vimatiḥ.

AKBh p.290,20-21: saḥajā satkāyadrṣṭir avyākrṭā. ... vikalpitā tv akuśaleti pūrvācāryāḥ.

隨煩惱[15b1]

TrBh p.30,3: tatra krodho vartamānam apakāram āgamyā yaś cetasā āghātaḥ.

TrBh p.30,6-7: upanāho vairānubandhaḥ.

TrBh p.30,10-11: mrakṣa ātmano 'vadyapracchādanā.

TrBh p.30,15: pradāśaś caṇḍavacodāśitā.

TrBh p.30,20-21: īrṣyā parasampattau cetaso vyāroṣo...

TrBh p.30,24-25: mātsaryam dānavirodhi cetasā āgrahaḥ.

TrBh p.30,29-30: māyā paravañcanā yābhūtārthasaṃdarśanaṭā.

TrBh p.31,3: śāṅghyam svadoṣapracchādanopāyasamgrhītaṃ cetasāḥ kautīlyam.

TrBh p.31,9-10: madaḥ svasampattau raktasyoddharṣaś cetasāḥ paryādānam.

TrBh p.31,13: vihiṃsā satvavihethanā.

TrBh p.31,17: āhrīkyam svayam avadyenālajjā.

TrBh p.31,18-19: anapatrāpyam parato 'vadyenālajjā.

TrBh p.31,23: styānam cittasyārmanyatā staimityam.

TrBh p.31,26: auddhatyam cittasyāvvyūpaśamaḥ.

TrBh p.31,28: āśraddhyam karmaphalasatyaratneṣv anabhisampratryayaḥ śraddhāvīpakṣaḥ.

TrBh p.31,32-p.32,1: kausidyam kuśalc cetaso 'nabhyutsāho vīryavīpakṣaḥ.

TrBh p.32,3-4: pramādo yair lobhadveṣamohakausidyaiḥ kleśād rāgadveṣamohādīkāc cittam na rakṣati kuśalam ca tatpratīpakṣabhūtaṃ na bhāvayati.

བཟེང་ངས་པ་གང་ཞེ་ན། དུན་པ་ཉོན་མོངས་ཅན་ཏེ། དགེ་བ་ལ་མི་གསལ་བའོ། །
 རྣམ་པར་གཡེང་།⁽⁵⁹⁾ བ་གང་ཞེ་ན། འདོད་ཆགས་དང་ཞེ་^[16a2] ལྷང་དང་གཏི་མུག་གི་ཆ་ཤས་ཀྱིས་⁽⁶⁰⁾
 འདོད་⁽⁶¹⁾ པའི་ཡོན་ཏན་ལྡོ་དག་⁽⁶²⁾ ལ་གང་སེམས་རྣམ་པར་འཕྲོ་བའོ། །
 ཤེས་བཞིན་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། ཉོན་མོངས་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པའི་ཤེས་རབ་སྟེ། དེས་ལུས་
 དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་^[16a3] ལྷོད་པ་ལ་མི་ཤེས་བཞིན་དུ་འཇུག་པའོ། །

4.a.6. aniyata

འཕྲོད་པ་གང་ཞེ་ན། ཡིད་ལ་གཅགས་པའོ། །
 གཉིད་གང་ཞེ་ན། འཇུག་པ་རང་དབང་མེད་པར་སེམས་སྡུད་པའོ། །
 རྟོག་པ་གང་ཞེ་ན། ཀྱང་དུ་ཚོལ་⁽⁶³⁾ བའི་ཡིད་ཀྱིས་^[16a4] བརྗོད་པ་སྟེ། སེམས་པ་དང་^[N15b] ཤེས་རབ་
 ཀྱི་བྱེ་⁽⁶⁴⁾ བྲག་གང་སེམས་ཅིང་བའོ། །
 དཔྱེད་⁽⁶⁵⁾ པ་གང་ཞེ་ན། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་བརྗོད་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་དུ་གང་སེམས་ཞིབ་པའོ། །

4.b. cittaviprayuktasamskāra

སེམས་དང་མི་ལྡན་པའི་འདུ་བྱེད་^[16a5] རྣམས་གང་ཞེ་ན། གང་དག་གཟུགས་དང་སེམས་དང་སེམས་
 ལས་བྱུང་བའི་གནས་སྐབས་ལ་གདགས་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་དང་གཞན་དུ་མི་གདགས་སོ། །
 དེ་དག་ཀྱང་གང་ཞེ་ན། ཐོབ་⁽⁶⁶⁾ པ་དང་། འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྟོམས་^[16a6] པར་འཇུག་པ་དང་། འགོག་
 པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་དང་། འདུ་ཤེས་མེད་པ་པ་⁽⁶⁷⁾ དང་། ལྷོག་གི་དབང་པོ་དང་། རིས་⁽⁶⁸⁾ མཐུན་པ་
 དང་། སྟེ་བ་དང་། གནས་པ་དང་། མི་རྟོག་པ་ཉིད་དང་། མིང་གི་ཚོགས་དང་། ^[16a7] ཚོག་⁽⁶⁹⁾ གི་ཚོགས་
 དང་། ཡི་གེའི་ཚོགས་དང་། སོ་སོའི་སྟེ་བོ་ཉིད་དང་། དེ་ལྟ་བུའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དག་གོ། །
 དེ་ལ་ཐོབ་པ་གང་ཞེ་ན། རྟེན་པ་དང་ལྡན་པའོ། །དེ་ཡང་ས་བོན་དང་། ^[D15a1] དབང་དང་། མངོན་དུ་
 ལྱུར་པ་དང་^[16a8] ཅི་རིགས་སུ་སྦྱར་⁽⁷⁰⁾ རོ། །

འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་གང་ཞེ་ན། དགེ་རྒྱས་ཀྱི་འདོད་ཆགས་དང་བལ་ལ། ཀོང་མའི་
 མ་ཡིན་པ་འབྱུང་བའི་འདུ་ཤེས་མངོན་དུ་བཏང་བའི་འདུ་ཤེས་⁽⁷¹⁾ ཡིད་ལ་བྱེད་པས་སེམས་དང་^[16b1]
 སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་བརྟན་པ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་འགོག་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

འགོག་གི་^[C15a] པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་གང་ཞེ་ན། ཅི་ཡང་མེད་པའི་སྟེ་བ་ཆེད་ཀྱི་འདོད་ཆགས་དང་
 བལ་ལ། སྲིད་པའི་ཅེ་མོ་ལས་ཁྲེན་དུ་བསྐྱེད་^[16b2] པའི་གནས་པར་འདུ་ཤེས་སྟོན་⁽⁷²⁾ དུ་བཏང་བའི་ཡིད་
 ལ་བྱེད་པས། སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་བརྟན་པ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་དང་། བསྟན་པ་རྣམས་
 ལས་ཀྱང་ལ་ཅིག་འགོག་པ་གང་ཡིན་པའོ། །

云何失念。謂染污念於諸善法不能明記爲性。
 云何散亂。謂貪瞋癡分心流蕩爲性。
 云何不正知。謂於身語意現前行中不正依住爲性。
 云何惡作。謂心變悔爲性。
 云何睡眠。謂不在轉心極昧略爲性。
 云何爲尋。謂能尋求意言分別思慧差別令心麤爲性。
 云何爲伺。謂能伺察意言分別思慧差別令心細謂性。
 云何心不相應行。謂依色心心法分位。但假建立不可施設。決定異性及不異性。
 彼復云何。謂得無想等至滅盡等至無想所有。命根衆同分。生老住無常。名身句身身異生性如是等類。
 云何爲得。爲若獲若成就。此復三種。謂若種子若白在若現前。如其所應。
 云何無想等至。謂已離遍淨食。未離上食。由出離想作意爲先。不恆現行心心法滅爲性。
 云何滅盡等至。謂已離無所有處食。從第一有更求勝進。由止息想作意爲先。不恆現行及恆行一分心心法滅爲性。

TrBh p.32,6: **muṣītā smṛtiḥ kṣiṣṭā smṛtiḥ.**

TrBh p.32,7: **vikṣepo rāgadveṣamohāṃśikaś cetaso visārah.**

TrBh p.32,10: **asamprajanyaṃ kleśasamprayuktā prajñā. yayāsamviditā kāyavākcittacaryā atikramaprkrāmādiṣu vartate karaṇiyākaraṇiyājñānāt. ctac cāpattisamṃsrayadānakarmakam.**

不決定[16a3]

TrBh p.32,12: **kaukrtyaṃ cetaso vipratīsārah.**

TrBh p.32,14-15: **middham asvatantvṛtticetaso 'bhisamkṣepah.**

TrBh p.32,19: **vitarkaḥ paryeśako manojalpaḥ prajñācetanāviśeṣah.**

TrBh p.32,25: **sa eva citasyaudārikatā.**

TrBh p.32,26-27: **vicāro 'pi hi cetanāprajñāviśeṣātmakah.**

TrBh p.32,28: **ata eva ca cittasūkṣmatety ucyate.**

心不相應行 [16a4]

ASBh p.11,3-4: **ity evam ete cittaviprayuktāḥ samskāraṇām dharmāṇām avasthāsu prajñāpanāt sarve prajñāpatisanto veditavyāḥ.**

AS p.18,22-23: **prāpti katamā. ... prāptiḥ pratilambhaḥ samanvāgama iti prajñāptiḥ.**

AS p.18,23-25: **asamjñisamāpattiḥ katamā. śubhakṛtsnavitarāgasyo[parya]vitarāgasya nihsaraṇasamjñāpūrvakcna manasikārcnā'sthāvarāṇām cittacaitasikānām dharmāṇām nirodhe asamjñisamāpattir iti prajñāptiḥ.**

AS p.18,25-27: **nirodhasamāpattiḥ katamā. ākiñcanyāyatana vitarāgasya bhavāgrāt calitasya śāntavihārasamjñāpūrvakcna manasikārcnā'sthāvarāṇām cittacaitasikānām dharmāṇām nirodhe nirodhasamāpattir iti prajñāptiḥ.**

འདྲ་ཤེས་མེད་པ་གང་། [16b3] ཞེན། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྣོ་མས་པར་འཇུག་པའི་འབྲས་བུ་སྟེ། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སེམས་པ་ཅན་གྱི་ཁྲོད་ (75) གྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ནང་དུ་བསྐྱེད་པའི་སེམས་དང་། སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ཚོས་བརྟན་ (76) པ་མ་ཡིན་པ་རྣམས་དང་འགོག་པའོ། །

སྲིག་གི་དབང་པོ་གང་ཞེན། རིས་མཐུན་པ་རྣམས་སུ་སྟོན་ (77) [16b4] གྱི་ལས་ཀྱིས་འཕངས་ (78) པས། གང་འདྲ་བྱེད་རྣམས་ཀྱི་ལཱ་ནས་པའི་དུས་ངེས་པའོ། །

རིས་མཐུན་པ་གང་ཞེན། གང་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ལུས་འདྲ་བའོ། །

སྐྱེ་བ་གང་ཞེན། རིས་མཐུན་པར་འདྲ་བྱེད་རྣམས་མ་བྱུང་བ་ལས་ [16b5] བྱུང་ (80) བ་གང་ཡིན་པའོ། །

ཀ་བ་གང་ཞེན། དེ་ལྟར་ (81) དེ་དག་གི་རྒྱན་གཞན་དུ་འལྱར་བའོ། །

གནས་པ་ [N16a] གང་ཞེན། དེ་ལྟར་དེ་དག་གི་རྒྱན་རྒྱུང་ཆགས་པའོ། །

མི་རྟག་པ་ཉིད་གང་ཞེན། དེ་ལྟར་དེ་དག་གི་རྒྱན་ཆད་པའོ། །

མིང་གི་ཚོགས་ [16b6] གང་ཞེན། ཚོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ (82) ཚོགས་སྐྱེད་གསུང་ (83) ལོ། །

ཚོགས་གི་ཚོགས་གང་ཞེན། (84) ཚོས་རྣམས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྱི་ཚོགས་སྐྱེད་གསུང་ (85) ལོ། །

ཡི་གའི་ཚོགས་གང་ཞེན། ཡི་གའི་ (86) རྣམས་ཏེ། དེ་གཉིས་ཀ་གསལ་ (88) བར་བྱེད་ [16b7] པའི་ཕྱིར་རོ། །
བརྗོད་པ་ཡང་དེ་དག་ཡིན་ཏེ། མིང་དང་ཚོགས་ལ་བརྟེན་ནས་དོན་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡི་གའི་ (87) ཡང་རྣམས་གངས་གཞན་དུ་མི་འལྱར་བའི་ཕྱིར་རོ། །

སོ་སེའི་སྐྱེ་བོ་ཉིད་གང་། [D15b] ཞེན། འཕགས་པའི་ཚོས་རྣམས་ [16b8] མཐོབ་པའོ། །

འདི་ནི་འདྲ་བྱེད་ཀྱི་སྲུང་བོ་ཞེས་བྱའོ། །

5. vijñānaskandha

རྣམ་པར་ཤེས་པ་གང་ཞེན། དམིགས་པ་རྣམ་པར་རིག་པའོ། །

སེམས་དང་ཡིད་ཀྱང་དེ་ཡིན་ཏེ། །

སྣོ་ཚོགས་པ་དང་ཡིད་རྟེན་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

དངོས་སུ་ན་ [17a1] སེམས་ནི་ (89) ཀྱུ་ན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྟེ། [C15b] འདི་ལྟར་དེ་ནི་འདྲ་བྱེད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ས་བོན་བསགས་པའོ། །

དེ་ཡང་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པ་ཡོངས་སུ་མ་ཆད་པའོ། །

རིགས་གཅིག་པ་དང་། [17a2] རྒྱན་ཆགས་པར་འཇུག་པའོ། །

云何無想所有。謂無想等至果。無想有情天中
生已。不復現行心心法滅爲性。
云何命根。謂於衆同分中。先業所引。住時決定
爲性。

云何衆同分。謂諸有情白類相似爲性。

云何爲生。謂於衆同分中。諸行本無今有爲性。

云何爲老。謂即是諸行相續變異爲性。

云何爲住。謂即是諸行相續隨轉爲性。

云何無常。謂即是諸行相續謝滅爲性。

云何名身。謂諸法白性增語爲性。

云何句身。謂諸法差別增語爲性。

云何文身。謂諸字爲性。以能表彰前二種故。亦
名爲顯。由與名句爲所依止顯了義故。亦名爲

字。非差別門所變易故。

云何異生性。謂於諸聖法不得爲性。

如是等類已說行蘊。

云何識蘊。謂於所緣境了別爲性。

亦名心意。由採集故。意所攝故。

最勝心者。謂阿賴耶識。何以故。由此識中諸行
種子皆採集故。

又此行緣不可分別。前後一類相續隨轉。

AS p.18,27-28: **āsaṃjñīkaṃ** katamat. asaṃjñīsattveṣu dveṣuṣūpappanasya'sthāvaraṇaṃ
cittacaitasikānāṃ dharmāmāṃ nirodhe āsaṃjñīkaṃ iti prajñaptiḥ.

AS p.18,28-29: **jīvitendriyaṃ** katamat. nikāyasabhāge pūrvakamāviddhe sthitikālaniyame
āyur iti prajñaptiḥ.

AS p.18,29-31: **nikāyasabhāgaḥ** katamaḥ. teṣāṃ teṣāṃ sattvānāṃ tasmims tasmin
sattvanikāye ātmabhāvasadṛśatāyāṃ nikāyasabhāga iti prajñaptiḥ.

AS p.18,31: **jātiḥ** katamā. nikāyasabhāge saṃskārāṇāṃ abhūtvā bhavc jātir iti prajñaptiḥ.

AS p.18,32: **jarā** katamā. nikāyasabhāge saṃskārāṇāṃ prabandhānyathātve jarati prajñaptiḥ.

AS p.18,32-33: **sthiṭiḥ** katamā. nikāyasabhā[ge] saṃskārāṇāṃ prabandhāvīpraṇāśc sthitiḥ
iti prajñaptiḥ.

AS p.18,33-p.19,1: **anīyatā** katamā. nikāyasabhāge saṃskārāṇāṃ prabandhavināśc'nīyateti
prajñaptiḥ.

AS p.19,1-2: **nāmākāyāḥ** katame. dharmāṇāṃ svabhāvādhipvacanc nāmākāyā iti prajñaptiḥ.

AS p.19,2-3: **padakāyāḥ** katame. dharmāṇāṃ viśeṣādhipvacanc padakāyā iti prajñaptiḥ.

AS p.19,3-4: **vyañjanakāyāḥ** katame. tadubhayāśrayeṣu akṣarceṣu vyañjanakāyā iti prajñaptiḥ,
tadubhayābhivyañjanatām upādāya. varṇo 'pi saḥ, arthasaṃvarṇanatām upādāya. akṣaraṃ
punaḥ paryāyākṣaraṇatām upādāya.

AS p.19,5: **prthagjanatvaṃ** katamat. āryadharmāṇāṃ apratilambhe prthagjanatvam iti
prajñaptiḥ.

識 [16b8]

AK I,16a: **viññānaṃ** prativiññaptiḥ.

AKBh p.11,7: viṣayaṃ viṣayaṃ pratī viññaptir upalabdhir viññānaskandha ity ucyate.

AS p.19,12: yac cittam mano viññānam api.

AKBh p.61,23: cinotitī cittam.

AK I,16b: manaāyatanam ca tat.

འདི་ལྟར་འགོག་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་དང་། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་དང་། འདྲ་
 ཤེས་མེད་པ་པ་རྣམས་ལས་⁽⁸⁹⁾ ཡངས་ནས་ཡང་ཡུལ་རྣམ་པར་རིག་པ་ཞེས་བྱ་། [17a3] བ་འཇུག་པའི་རྣམ་
 པར་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་དང་། དམིགས་པའི་རྒྱུ་ལ་སྒྲེས་⁽⁹⁰⁾ རྣམ་རྣམ་པ་གཞན་དུ་འཇུག་པ་ཉིད་དང་། ཚད་
 རྣམ་ཡང་འབྱུང་བ་ཉིད་དང་། འཁོར་བར་འཇུག་པ་དང་། རྗེག་⁽⁹¹⁾པའི་ཕྱིར་རོ། །

ཀུན་གཞི་རྣམ་ [17a4] པར་ཤེས་པ་དེ་ཉིད་ནི་ས་ཤོན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞི་ཉིད་དང་། ལུས་ཀྱི་ཀུན་གཞི་
 དང་རྒྱ་ཉིད་དང་། ལུས་ལ་གནས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡང་ཕྱིར་རོ། །

ལེན་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་དེ་ཡིན་ཏེ། ལུས་ལེན་པའི་ཕྱིར་རོ། ། [17a5]

དངོས་སུ་ན་ཡིད་ནི་⁽⁹²⁾ཀུན་གཞི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་དམིགས་ཏེ། རྟག་དུ་བདག་དུ་མོངས་པ་དང་།
 བདག་དུ་ལྟ་བ་དང་། བདག་དུ་ང་རྒྱལ་དང་། བདག་ལ་ཆགས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པའི་
⁽⁹³⁾རྣམ་ [17a6] པར་ཤེས་པ་སྟེ། རིགས་གཅིག་པ་དང་། རྒྱུ་ཆགས་པར་འཇུག་པ་སྟེ། དགྲ་⁽⁹⁴⁾བཅོམ་པ་
⁽⁹⁵⁾དང་། འཕགས་པའི་ལམ་དང་། [N16b] འགོག་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པའི་དུས་མ་གཏོགས་སོ།

6. skandha

ཅིད་ཕྱིར་ལུང་པོ་ཞེས་ [17a7] བྱ་ལེན། སྤངས་པའི་ཕྱིར་ཏེ་དུས་དང་རྒྱད་དང་རྣམ་པ་དང་འགྲོ་⁽⁹⁶⁾བ་
 དང་། ཡུལ་ཐ་དང་པའི་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་མདོར་བསྟུས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །

7. āyatana

སྟེ་མཆེད་བཅུ་གཉིས་ནི་མིག་གི་སྟེ་མཆེད་དང་། གཟུགས་ཀྱི་སྟེ་ [17a8] མཆེད་དང་། རྟ་བའི་སྟེ་⁽⁹⁷⁾
 མཆེད་དང་། སྤྲི་སྟེ་མཆེད་དང་། སྤྲི་སྟེ་མཆེད་དང་། རྒྱུ་སྟེ་མཆེད་དང་། ལྷེད་སྟེ་མཆེད་དང་། རོད་སྟེ་
 [D16a] མཆེད་དང་། ལུས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་དང་། རེག་བྱའི་སྟེ་མཆེད་དང་། ཡིད་ཀྱི་ [17b1] སྟེ་མཆེད་དང་།
 ཚོས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་དོ། །

མིག་ལ་སོགས་པ་དང་། གཟུགས་དང་སྟོང་དང་རྒྱ་དང་རོད་སྟེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་ཡང་ལྷ་མ་བཞིན་དུ་
 བཤད་དོ། །

རེག་བྱའི་སྟེ་མཆེད་ནི་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་དག་དང་། [17b2] གང་རེག་བྱའི་ཕྱོགས་གཅིག་བཤད་
 པ་དོ། །

ཡིད་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་ [C16a] ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ལུང་པོ་གང་ཡིན་པ་དོ། །

ཚོས་ཀྱི་སྟེ་མཆེད་ནི་གང་ཚོར་བ་དང་། འདྲ་ཤེས་དང་། འདྲ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་རིག་བྱེད་མ་
 [17b3] ཡིན་པ་དང་། འདྲས་མ་བྱས་སོ། །

又由此故從滅盡等至無想等至無想所有起者。
了別境名轉識還生。待所緣緣差別轉故。數數
間斷還復轉故。

又令生死流轉旋還故。

阿賴耶識者能攝藏一切種子故。

又能攝藏我慢相故。

又復緣身為境界故。即此亦名阿陀那識。能執
持身故。

最勝意者。謂緣阿賴耶識為境。恆與我癡我見
我慢及我愛等相應之識。前後一類相續隨轉。
除阿羅漢果及與聖道滅盡等至現在前位。

問以何義故說名為蘊。

答以積聚義說名為蘊。謂世相續品類趣處差別
色等總略攝故。

復有十二處。謂眼處色處。耳處聲處。鼻處香

處。舌處味處。身處觸處。意處法處。

眼等五處及色聲香味處。如前已釋。

言觸處者。謂四大種及前所說所觸一分。

言意識者。即是識蘊。

言法處者。謂受想行蘊無表色等及與無為。

心 [17a1]

AS p.19,12-13: tatra cittam katamat. skandhadhātāvāyanavāsānāparibhāvitaṃ sarvabijakam ālayavijñānam.

TrBh p.19,4-5: kiṃ tarhy aparicchinnāmlambanākāraṃ.

ASBh p.12,5-7: api ca saṃjñāṃ vijñānakāyānāṃ sā jātir nopalabhyate yā 'vyākṛtā vipākasamgrhītā syāt.

Tr 4cd: tac ca vartate srotasaughavat.

ASBh p.13,12-14: kena kīraṇeṇasaty ālayavijñāne 'cittā samāpattir na sambhavati. tathā hy
asamjñīsamāpannasya vā nirodhasamāpannasya vā vijñānam eva kāyād apakrāntam syāt. nārapakrāntam
tataḥ kālakriyāiva bhavet.

TrBh p.35,2-3: evam āsamjñīkādīṣu manovijñāne niruddhe tadapagame punaḥ kuta utpadyate. yat tasya
kālakriyā na bhavati.

ASBh p.12,7-8: pratiniyatāśrayaḥ sadvijñānakāyāḥ pravartante...

ASBh p.12,10-11: tathā hi cakṣurvijñānam ekadā pravartate ekadā na pravartate evam avasiṣṭāni.

TrBh p.37,14: na cālayavijñānam antareṇa saṃsārapravṛtīr nivṛtīr vā yujyate.

ASBh p.11,10-11: āliyant tasmīn dharmā bijataḥ, sattvā vātmagrāheṇcty ālayavijñānam.

ASBh p.11,12-13: punaḥ punaḥ pratisaṃdhibandhe ātmabhāvopādānād ādānavijñānam.

意 [17a4]

Tr 5c-6d: tadālambaṃ manonānavijñānaṃ mananātmakam. kleśaiḥ caturbhiḥ sahitaṃ nivṛtvāyākṛtaiḥ
sadā. ātmaḍṣṭyātmanohātmanamānātmāsnehasamjñītaiḥ

Tr 7b-d: arhato na tat, na nirodhasamāpattau mārge lokottare na ca.

AS p.19,14-15: manaḥ katamat. yan nityakālam manyanātmakam ālayavijñānāmlambanaṃ caturbhiḥ
kleśaiḥ samprayuktam ātmaḍṣṭyātmasneheṇā'smimāncnā'vidyayā ca.

蘊[17a6]

AKBh p.13,7: ...rāśyarthāḥ skandhārtha itī siddham.

AKBh p.13,5-7: yat kiṃcid rūpam atitānāgatapratyutpannam ādhyātmikam bāhyaṃ vā audhārikam vā
sūksmaṃ vā hīnaṃ vā praṇītam vā yad vā dūre yad vā antike tat sarvam aikadhyam abhisamṅkṣiṃpya
rūpaskandha itī samkhyāṃ gacchati.

處[17a7]

AKBh p.23,19-20: "spraṣṭavyaṃ dvividhaṃ (AK I,34a)," bhūtāni bhautikam ca. tatra bhūtāni catvāri.
bhautikaṃ ślakṣṇādi saptavidham.

AKBh p.11,8-10: ya eṣa vijñānaskandha ukta āyatanavyavasthāṃ "manaāyatanam ca tat (AK I,16b)."

AKBh p.11,2-4: "ete punas trayāḥ (AK I,15b)," vedanāsamjñāsamskāraskandhāḥ āyatanadhātuvyavasthayaṃ
"dharmāyatanadhātuvākhyāḥ sahāvijñāptyaṃskṛtair (AK I,15cd)."

AKBh p.11,17: vedanādayaḥ skandhāḥ trayo 'vijñāptir asamskṛtāni ca dharmāyatanam...

འདུས་མ་བྱས་གང་ཞེ་ན། རྣམ་མཁའ་དང་། སོ་སོར་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པའི་འགོག་པ་དང་། སོ་སོར་
བརྟགས་པའི་འགོག་པ་དང་། དེ་བཞིན་ཉིད་དོ། །

དེ་ལ་རྣམ་མཁའ་གང་ཞེ་ན། [17b4] གཟུགས་ཀྱི་གོ་འབྱེད་པའོ། །

སོ་སོར་བརྟགས་པ་མ་ཡིན་པའི་འགོག་པ་གང་ཞེ་ན། གང་འགོག་པ་ལ་བྲལ་བ་མ་ཡིན་པ་སྟེ། དེ་ནི་
ཉོན་མོངས་པའི་གཉེན་པོ་མེད་པར་ཡུང་པོ་རྣམས་གཏན་དུ་མི་སྟེ་བའོ། །

སོ་སོར་བརྟགས་པའི་ [17b5] འགོགས་པ་གང་ཞེ་ན། གང་འགོག་པ་དེ་ནི་བྲལ་བ་སྟེ། དེ་ནི་གང་ཉོན་
མོངས་པའི་གཉེན་པོ་མེད་པའི་རྣམས་གཏན་དུ་མི་སྟེ་བའོ། །

དེ་བཞིན་ཉིད་གང་ཞེ་ན། གང་ཚོས་རྣམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་དང་། ཚོས་བདག་མེད་པ་ཉིད་དོ། [17b6]
ཅིའི་ཕྱིར་སྟེ་མཚེད་ཅེས་བྱ་ཞེ་ན། རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྟེ་བའི་སྟོའི་ཕྱིར་རོ། །

8. dhātu

ཁམས་བཙུག་པོ་བརྒྱུད་ནི་མིག་གི་ཁམས་དང་། གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་དང་། མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་
ཁམས་དང་། རྣ་བའི་ཁམས་དང་། [17b7] སྒྲིའི་ཁམས་དང་། རྣ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང་། སྒྲིའི་
ཁམས་དང་། འྲིའི་ཁམས་དང་། སྒྲིའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང་། ལྗེའི་ཁམས་དང་། རོའི་ཁམས་
དང་། ལྗེའི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་[N17a]ཁམས་དང་། [17b8] ལྷུས་ཀྱི་ཁམས་དང་། རེག་བྱའི་ཁམས་དང་།
ལྷུས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དང་། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་དང་། ཚོས་ཀྱི་ཁམས་དང་། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་
ཤེས་པའི་ཁམས་སོ། །

མིག་ལ་སོགས་[D16b] པའི་ཁམས་དང་། [18a1] གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཁམས་ནི་སྟེ་མཚེད་རྣམས་ཇི་
ལྟ་བུ་བཞིན་ནོ། །

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་དུག་པོ་དག་ནི་མིག་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་བརྟེན་ཏེ། གཟུགས་ལ་སོགས་
པ་ལ་དམིགས་[18a2] པ་རྣམ་པར་རིག་པའོ། །

ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ནི་དེ་དག་ཉིད་འགགས་མ་ཐག་པ་སྟེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་དུག་པའི་གནས་བརྟན་པའི་
ཕྱིར་རོ། །

དེ་ལྟར་ན་ཁམས་བཙུག་པོ་[C16b] རྣམ་པར་གཞག་གོ། །

གཟུགས་ཀྱི་སྤང་པོ་གང་ཡིན། [18a3] པ་དེ་ནི་སྟེ་མཚེད་དང་། ཁམས་བཙུག་དང་། ཚོས་ཀྱི་སྟེ་མཚེད་
དང་། ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་གཅིག་གོ། །

རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སྤང་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡིད་ཀྱི་སྟེ་མཚེད་དང་། སེམས་ཀྱི་ཁམས་བདུན་ནོ། །

གཞན་སྤང་པོ་ [18a4] གསུམ་པོ་ (100)གང་ཡིན་པ་དག་དང་། གཟུགས་ཀྱི་སྤང་པོའི་ཕྱོགས་གཅིག་པོ་
དང་། འདུས་མ་བྱས་དང་བཅས་པ་ནི་ཚོས་ཀྱི་སྟེ་མཚེད་དང་། ཚོས་ཀྱི་ཁམས་སོ། །

ཅིའི་ཕྱིར་ཁམས་ཞེས་(101)བྱ་ཞེ་ན། བྱེད་པ་མེད་ལ་རང་གི་ [18a5] མཚན་ཉིད་འཛིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །

云何無爲。謂虛空無爲。非擇滅無爲。擇滅無爲。及眞如等。

云何虛空。謂若容受諸色。

云何非擇滅。謂若滅非離繫。此復云何。謂離煩惱對治而諸蘊畢竟不生。

云何擇滅。謂若滅是離繫。此復云何。謂由煩惱對治故諸蘊畢竟不生。

云何眞如。謂若諸法法性法無我性。

問以何義故名爲處耶。

答諸識生長門義。是處義。

復有十八界。謂眼界色界眼識界。耳界聲界耳識界。鼻界香界鼻識界。舌界味界舌識界。身界觸界身識界。意界法界意識界。

眼等諸界及色等諸界。如處中說。六識界者。謂依眼等根緣色等境。了別爲性。

言意界者謂即無間滅等。

爲欲顯示第六意識。及廣建立十八界故。

如是色蘊卽十處十界及法處法界一分識蘊卽意處及七心界。餘三蘊及色蘊一分并諸無爲卽法處法界。

無爲 [17b3]

ASBh p.14,17: ākāṣaṃ rūpābhāva itī...

AKBh p.4,13: anāgatānāṃ dharmānāṃ utpādasyātyantavighnabhūto viśamyogād yo 'nyo nirodhaḥ, so 'pratisamkhyānirodhaḥ.

AK 1,6ab: pratisamkhyānirodho yo viśamyogaḥ.

處義

AKBh p.13,18: cittacaittīyadvārārtha āyatanārthaḥ.

十八界 [P17b6]

AKBh p.11,22: yad yat samanantaranirodhaṃ vijñānaṃ tat tan manodhātūr ity ucyeta.

AKBh p.11,28-p.12,1: śaṣṭhasya manovijñānadhātōr āśrayo 'nyo nāsti. atas tadāśraya-prasiddhyarthaṃ manodhātūr upadiṣṭaḥ. cvam āśrayāśritāmbanaṣaṭkavyavasthānād aṣṭādaśa dhātavo bhavanti.

AKBh p.11,16-18: avijñaptivarjyo rūpaskandho daśāyatanāni daśa dhātavaḥ. vedanādayaḥ skandhās trayo 'vijñaptir asaṃskṛtāni ca dharmāyatanāṃ dharmadhātūś ca. vijñānaskandho manaāyatanāṃ ṣaḍ vijñānadhātavo manodhātūś ceti.

ཅིད་ཕྱིར་སྤང་བོ་ལ་སོགས་པ་བཤད་ཅེ་⁽¹⁰²⁾ན། བདག་ཏུ་འཛིན་པ་རྣམ་པ་གསུམ་གྱི་གཉེན་པོ་⁽¹⁰³⁾གོ་
རིམས་བཞིན་ནོ། །

བདག་ཏུ་འཛིན་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ནི་གཅིག་ཤུར་འཛིན་པ་དང་། ^[18a6] ཟ་བར་འཛིན་པ་དང་། བྱེད་
པར་འཛིན་པ་ལོ། །

ཁམས་བཙེམ་བརྒྱུད་ལ་གཟུགས་ཅན་དུ་ཞེ་ན། གང་དག་གཟུགས་⁽¹⁰⁴⁾ཀྱི་སྤང་བོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །

གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་དུ་ཞེ་ན། ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

བརྟན་⁽¹⁰⁵⁾དུ་ཡོད་པ་དུ་ཞེ་ན། ^[18a7] གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་གཅིག་སྟེ། ⁽¹⁰⁶⁾ ཡུལ་བསྟན་དུ་ཡོད་པ་ལོ། །

བསྟན་དུ་མེད་པ་ནི་⁽¹⁰⁷⁾དུ་ཞེ་ན། ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

ཐོགས་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། གཟུགས་ཅན་བརྒྱ་སྟེ། གང་ལ་གང་ཐོགས་པ་ལོ། །

ཐོགས་⁽¹⁰⁸⁾པ་^[18a8] མེད་⁽¹⁰⁹⁾པ་དུ་ཞེ་⁽¹¹⁰⁾ན། ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

ཟག་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། བཙེམ་པ་དང་ཐམ་གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །

མི་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །⁽¹¹¹⁾

དེ་དག་ཉོན་མོངས་པ་སྟེ་བའི་མངོན་སུམ་གྱི་^[N17b]སྤྱིད་ཡུལ་གྱི་ཕྱིར་ལོ། ^[18b1]

ཟག་པ་མེད་པ་དུ་ཞེ་ན། ཐམ་གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །

འདོད་པ་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། ཐམས་ཅད་དོ། །

གཟུགས་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། ^[D17a] བརྒྱ་བཞི་སྟེ། སྤྱི་དང་། རྩོད་དང་། ལྷ་དང་། ལྷའི་རྣམ་
པར་ཤེས་པ་མ་^[18b2]གཏོགས་པ་ལོ། །

གཟུགས་⁽¹¹²⁾མེད་པ་དང་རབ་ཏུ་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། ཐམ་གསུམ་མོ། །

མི་ལྡན་པ་དུ་ཞེ་ན། གསུམ་གྱི་ཆ་ལོ། །

སྤང་བོར་བསྐྱས་པ་དུ་ཞེ་ན། འདུས་མ་བྱས་མ་གཏོགས་པ་ལོ། །

ཉེ་བར་ལེན་པའི་སྤང་བོས་^[18b3] བསྐྱས་པ་དུ་ཞེ་ན། གང་ཟག་པ་དང་བཅས་པ་རྣམས་སོ། །

དགོ་བ་དུ། མི་དགོ་བ་དུ། ལྷང་དུ་མ་བསྟན་པ་དུ་ཞེ་ན། བརྒྱ་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་ཆར་ཏེ། སེམས་ཀྱི་
ཁམས་བསྟན་དང་། གཟུགས་ ^[C17a] དང་སྦྲ་དང་ཆོས་ཀྱི་ ^[18b4]ཁམས་སོ། ། ལྷག་མ་རྣམས་ནི་ལྷང་དུ་མ་
བསྟན་⁽¹¹³⁾པ་ལོ། །

問以何義故名爲界。答以能任持無作用性白相義故。說名爲界。

問以何義故宣說蘊等。答爲欲對治三種我執。如其次第三種我執者。謂一性我執。受者我執。作者我執。

復次此十八界幾有色。謂十界一少分即色蘊白性。

幾無色。謂所餘界。

幾有見。謂一色界。

幾有見。謂所餘界。

幾有對。謂十有色界。若彼於是處有所障礙。是有對義。

幾無對。謂所餘界。

幾有漏。謂十五界及後三少分。由於是處煩惱起故。現所行處故。

幾無漏。謂後三少分。

幾欲界繫。謂一切。

幾色界繫。謂十四。除香味鼻舌識。

幾無色界繫。謂後三。

幾不繫。謂即彼無漏界。

幾蘊所攝。謂除無爲。

幾取蘊所攝。謂有漏。

幾善幾不善幾無記。謂十通三種七心界及色聲

法界八無記。

界義

ASBh p.19,n.5: svalakṣaṇadhāraṇārthaḥ. Cf. T31,666c,27.

Cf. AKBh p.8,13: ity etc catvāraḥ svalakṣaṇopādāyarūpadhāranād dhātavaś catvāri mahābhūtāny ucyante.

ASBh p.22,4-5: rūṣiṭi rūpaṃ tasya dharmasyātmavabhāvas tasmād asau rūṣi...

AS p.20,9: rūṣiviparyayeṇāpy arūṣi. sarvāny arūṣiṇi.

AK I,29ab: sanidarśana cko 'tra rūpaṃ.

AKBh p.19,2: uktaṃ bhavati anidarśanāḥ śeṣā iti.

AK I,29bc: sapratighā daśa, rūṣiṇaḥ.

AKBh p.21,23-26: ya etc manodharmamanovijñānadhātava uktāḥ " sāsraṇānāsraṇā etc trayāḥ (AK I,31cd)" ye mārgasatyāsamskr̥tasamgrhītās te 'nāsraṇā anye sāsraṇāḥ. "śeṣāṣ tu sāsraṇāḥ (AK I,31d)."

AK I,30ab: kāmadhātuvāptāḥ sarve.

AK I,30b-d: rūpe caturdaśa, vinā gandharasaghrāṇajihvāvijñānadhātubhiḥ.

AK I,31ab: ārūpyāptā manodharmamanovijñānadhātavaḥ.

AKBh p.12,4: tatra skandhaiḥ sarvasamskr̥tasamgrahaḥ.

AKBh p.12,4: upādānaskandhaiḥ sarvasāsraṇāṇām...

AKBh p.20,11-12: anye daśa dhātavaḥ kuśalākuśalāvyaḥkr̥tāḥ. tatra sapta dātavo 'lobhādisamprayuktāḥ kuśalāḥ. lobhādisamprayuktā akuśalāḥ. anye avyākṛtāḥ.

AK I,29cd: avyākṛtā aṣṭau, ta evārūpaśabdakāḥ.

ནང་གི་དུ་ཞེ་ན། བཅུ་གཉིས་ཏེ། གཟུགས་དང་། སྐྱ་དང་། དྲི་དང་། རོ་དང་། རེག་བྱ་དང་། ཚེས་ཀྱི་
(114) ཁམས་མ་གཏོགས་པ་དོ། །

ཕྱི་རོལ་གྱི་དུ་ཞེ་ན། རུག་སྟེ། གང་། [18b5] དག་མ་གཏོགས་པ་རྣམས་སོ། །

དམིགས་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། སེམས་ཀྱི་ཁམས་བདུན་དང་། ཚེས་ཀྱི་ཕྱོགས་གཅིག་ཀྱང་ཡིན་
ཏེ། གང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་དོ། །

དམིགས་པ་མེད་པ་དུ་ཞེ་ན། ལྷག་མ་། [18b6] བཅུ་དང་། ཚེས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་སོ། །

རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པ་དུ་ཞེ་ན། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་དང་། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འི་ཁམས་
དང་། ཚེས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་སོ། །

རྟོག་པ་མེད་པ་དུ་ཞེ་ན། [18b7] ལྷག་མ་རྣམས་སོ། །

ཟིན་པ་དུ་ཞེ་ན། རང་གི་ལྗང་དང་། བཞིའི་ (115) ཕྱོགས་ (116) ཏེ། གཟུགས་དང་། སྐྱ་དང་། དྲི་དང་། རོ་
དང་། རེག་བྱ་རྣམས་ཀྱི་དོ། །

ཟིན་པ་མ་ཡིན་པ་དུ་ཞེ་ན། བཞིའི་ཕྱོགས་སོ། །

བསྟན་པ་མཚུངས་ [18b8] པ་དུ་ཞེ་ན། རང་གི་གཟུགས་ཅན་ལྟེ། རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དག་དང་
ཡུལ་སྐྱེན་མོང་བ་ (117) ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ (118) རོ། །

དེ་དག་དང་མཚུངས་པ་དུ་ཞེ་ན། དེ་དག་ཉིད་རང་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་སྟོང་པ་སྟེ། རང་གི་རིགས་
དང་། [19a1] མཐུན་པ་འི་ཕྱིར་རོ། །

ཡུང་པོ་ལྗེའི་རབ་དུ་བྱེད་པ་སྟོབ་དཔོན་དབྱིག་གཉེན་གྱིས་མཇུག་པ་རྟོགས་སོ། །

རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཇི་ན་མི་ཏ་དང་། ལྷི་ལེ་རྩ་པོ་རྟི་དང་། དུ་ན་ལྷི་ལེ་ [19a2] དང་། ལྷ་ཚེན་གྱི་ལོ་རྩལ་པ་
བརྗེ་ལོ་ཤེས་སྟེ་ལ་སོགས་པས་སྦྱར་ཅིང་ལུས་ཏེ། གཏན་ལ་ཡབ་པ། །

幾是內。謂十二。除色聲香味觸及法界。
幾是外。謂六即所除。
幾有緣。謂七心界及法界少分心所有法。
幾無緣。謂餘十及法界少分。
幾有分別。謂意識意識界法界少分。

〔無分別の說明欠〕

幾執受。謂五內界及四界少分。謂色香味觸。
幾非執受。謂餘九四少分。
幾同分。謂五內有色界。由與白識等境界故。
幾彼同分。謂即彼白識空時與白類等故。

大乘五蘊論一卷

AK I,39ab: dvādaśādhyātmikāḥ hitvā rūpādīn.

AKBh p.22,27-p.23,6: kati sālambanāḥ katy anālambanāḥ. "sapta sālambanāś cittadhātavaḥ (AK I,33ab)," cakṣuḥśrotraghrāṇajihvākāyamanovijñānadhātavo manodhātuś ca etc sapta cittadhātavaḥ sālambanā viśayagrahaṇāt. "ardhaṃ ca dharmataḥ (AK I,33b)." sālambanaṃ yac caitasikasvabhāvam. seṣā daśa rūpiṇo dhātavo dharmadhātupradcśaś cāsamprayuktako 'nālambanā iti siddham.

Cf.AKBh p.22,6-8: tatra manodhātur manovijñānadhātuḥ samprayuktaś ca dharmadhātur anyatra vitarkavicārābhyāṃ kāmadhātatau prathame ca dhyāne savitarkāḥ savicārāḥ.

AS p.28,3-5: katham upāttaṃ, katy upātāni, kimartham upāttaparikṣā. ... rūpaskandhaikadecśaḥ, pañca rūpiṇi dhātvāyatanāni, caturṇāṃ caikadecśaḥ.

ASBh p.43,16-17: pañca rūpiṇi dhātvāyatanāni cakṣurādīni. caturṇāṃ caikadecśo rūpagandharasapraśṭavyānām indriyāvinirbhāgi.

AK I, 31b-d: dharmasamjñakāḥ, sabhāgaḥ. tatsabhāgāś ca seṣāḥ.

AS p.27,32-p.28,2: vijñānavirahitatsādṛśyendriyaviśayaprabandhotpattito 'pi, vijñānavirahitasvasādṛśyapratibandhotpattito 'pi sabhāgatatsabhāgaṃ draṣṭavyam. rūpaskandhaikadecśaḥ, pañca rūpiṇi dhātvāyatanāni. vijñānayuktāyuktāt mābhivivecātyājanārtham.

テキスト異同

(1) N: ཟུང་	(29) P,N: རྒྱུ་	(58) N: རྩོག་
(2) P,N: སོ་	(30) P,N: སློང་	(59) N: གཡང་
(3) N: བཞེར་	(31) P,N: གེས་	(60) P,N: རྒྱི་
(4) N: རྣའི་	(32) N: ཉམ་	(61) N: འདད་
(5) N: ལ་	(33) P: རྒྱུ་	(62) P,N: དག་
(6) D: སྐམ་	(34) N: རྣར་	(63) N: བཚོལ་
(7) N: བའ་	(35) P,N: འཕྲ་	(64) N: ཟུ་
(8) P,N: རྣམ་གསུམ་པ་	(36) P,N: ཏེ་	(65) P,N: སྤོད་
(9) N: ས་པ་	(37) N: རྩ་དུ་	(66) N: ཐབ་
(10) N: དང་	(38) D,C: ས་པ་	(67) D,C: ས་པ་
(11) P,N: དེ་	(39) N: ལ་	(68) C: རུས་
(12) D: དེ་	(40) N: བྲང་	(69) N: ཚོ་
(13) P,N: ས་པ་	(41) P,N: ས་པ་	(70) N: རྩ་
(14) D: ཚེས་	(42) N: ས་པ་	(71) P,N: འདུ་ཤེས་
(15) N: རྣམ་	(43) N: རྩོགས་	(72) P,N: མངོན་
(16) N: རྣམ་	(44) P,N: འཛིགས་	(73) P,N: འདུ་ཤེས་ལྗོངས་
(17) N: ཏིང་འཛིན་	(45) P,N: འཛིགས་	(74) N: སམས་
(18) N: དགེ་བཅུ་	(46) N: ལ་	(75) P,N: རྩོང་
(19) N: སྤ་	(47) N: བལྟ་	(76) P,N: བལྟན་
(20) P,N: གཡེང་བ་	(48) N: མདུ་	(77) C: རྩན་
(21) N: གས་	(49) N: འགྲུགས་	(78) N: འཕངས་
(22) N: འབྲུད་	(50) D,C: རྒྱུ་	(79) P,N: རྒྱུ་
(23) P,N: རྒྱུ་	(51) P,N: བཟུང་	(80) N: འབྲུང་
(24) N: ཉམ་	(52) N: སམས་	(81) P,N: ལྟ་
(25) P,N: རིག་	(53) P: ཐོ་མཚམས་ ;	(82) P: རྒྱི་
(26) P: མངོམ་	N: མཐོ་མཚམས་	(83) N: དག་
(27) P,N: ས་པ་ལྟན་པ་	(54) P,N: འཛོམས་	(84) N: ལ་
(28) P,N: སྤེ་	(55) P,N: འཛོམས་	(85) D,C: གཏེ་
	(56) D,C: རླང་	(86) P,N: བསལ་
	(57) N: སམས་	(87) N: གོ་

- (88) P,N: ཉི་ C: མོངས་པ་
- (89) D,C: ་ལས་ (118) N: ཕྱི་
- (90) N: བཞེས་
- (91) N: ལོ་བ་
- (92) D: རི་ཡི་དུ་ན་
- (93) P,N: བར་
- (94) D: དག་
- (95) C: ་པ་
- (96) D,C: མོལ་
- (97) D: ལྷ་
- (98) N: གཉན་
- (99) N: ལྷེལ་
- (100) C: བ་?
- (101) N: གལས་ཤེས་?
- (102) P: ཅེས་
- (103) P,N: བོར་
- (104) C: གཟུག་
- (105) P,N: བརྟན་
- (106) N: ལྷ་
- (107) N: མེད་པ་གང་
- (108) P: རོག་
- (109) N: མད་
- (110) N: ལ་
- (111) D,C: མི་ལྷན་ཆེད་
- (112) N: གཟུགས་
- (113) P: ལྷན་
- (114) N: ལྷ་
- (115) P,N: ཕྱི་འི་
- (116) N: ཕྱགས་
- (117) P,N: མོང་པ་ ;